प्राक्कथन

प्यारे बच्चो! संस्कृत को समझने, बोलने तथा लिखने के लिए हमें व्याकरण के कुछ नियमों को समझना होगा। प्रस्तुत पुस्तक संप्रेषणात्मक पाठ्यक्रम पर आधारित है। आशा है इस पुस्तक के द्वारा संस्कृत भाषा को समझकर आप सब भी इस भाषा को बोल-चाल का माध्यम बना सकेंगे। इस पुस्तक में सरल भाषा में संस्कृत के नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार व्याकरण के नियमों को समझाया गया है। आशा है छात्र इस प्रयास से लाभान्वित होंगे। सभी विद्वद्गण अपने अनुपम सुझाव देकर पुस्तक को और उपयोगी बनाने में हमारी सहायता करें।

मैं विशेष रूप से न्यू सरस्वती हाउस (इंडिया) प्रा०लि० की आभारी हूँ जो छात्रों की पाठ्य-सामग्री को अधिकाधिक रोचक तथा उपयोगी बनाने के लिए निरंतर प्रयास करते रहते हैं। मैं कृतज्ञ हूँ अपने पिता श्री मेहरचन्द जावल जी की जिनकी प्रेरणा ने मुझे संस्कृत विषय के साथ जोड़कर मेरे जीवन को संस्कृतमय बनाया ताकि मैं अपने देश के इस सुंदर व गरिमा से युक्त भाषा-ज्ञान को पा सकूँ तथा इसे आगे फैला भी सकूँ।

–सुनीता सचदेव

संस्कृत भाषा का परिचय

प्रिय बच्चो! संस्कृत शब्द का अर्थ है–संस्कार अर्थात् पवित्र की गई भाषा। नाम के ही अनुसार संसार में केवल संस्कृत भाषा ही दोषहीन व्याकरण वाली पवित्र भाषा है।

संस्कृत भाषा उस भारोपीय परिवार की भाषा है जिससे सभी भाषाओं का जन्म हुआ। भारत की अनेक भाषाओं का जन्म संस्कृत भाषा से ही हुआ।

प्राचीन काल में सभ्य समाज संस्कृत भाषा बोलता था तथा ग्रामीण समाज प्राकृत भाषा बोलता था जो कि संस्कृत का ही परिवर्तित रूप है। चारों वेद, उपनिषद्, पुराण इत्यादि इसी भाषा में लिखे गए। रामायण तथा महाभारत भी इसी भाषा में लिखे गए।

संस्कृत के अनेक कवियों में से कुछ प्रसिद्ध नाम हैं–कालिदास, भारवि, बाणभट्ट, माघ इत्यादि। आज भी अनेक विद्वान इस भाषा को अपनी रचनाओं से समृद्ध कर रहे हैं। सभी संस्कृत प्रेमियों का मन दक्षिण भारत में कर्नाटक के 'माटुर' और 'होसहल्ली' तथा मध्यप्रदेश के 'झिरी' गाँव जाने को तो करता ही होगा जहाँ के सभी लोग केवल संस्कृत भाषा ही बोलते हैं। संसार में संस्कृत के अतिरिक्त अन्य कोई ऐसी भाषा नहीं है जो प्राचीनतम होते हुए भी वर्तमान युग में बोली जाती हो। आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार संसार की सभी भाषाओं में से 'संस्कृत भाषा' ही कम्प्यूटर के प्रयोग के लिए सर्वाधिक उपयुक्त भाषा है। कुछ विद्वानों के अनुसार संस्कृतभाषी छात्र संसार की किसी भी भाषा को अन्य लोगों से अधिक जल्दी व आसानी से सीख सकते हैं। संभवत: संस्कृत भाषा के इसी गुण को जानकर विदेशों में भी दो विद्यालयों में संस्कृत भाषा को अनिवार्य विषय बना दिया गया है। 'जर्मनी' में भी संस्कृत भाषा को सीखने वाले लोग दिन-प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे हैं। हमें गर्व है कि 'संस्कृतभाषा' हमारे भारत देश की भाषा है।

पाठ्यक्रमः

1. संस्कृतवर्णमाला
2. मात्राज्ञानम्
3. संयुक्ताक्षरज्ञानम्
4. वर्ण-विन्यासः संयोजनम् च
5. शब्दरूपाणि – अकारान्त पुंल्लिंग शब्द–अज, देव, राम इत्यादि।
   आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द–लता, रमा, निशा इत्यादि।
   अकारान्त नपुंसकलिंग शब्द–फल, पुस्तक, मित्र इत्यादि।
   सर्वनाम शब्द–तत्, एतत्, किम्, युष्मद्, अस्मद्, यत्।
6. धातुरूपाणि (लट् लकार एवं लृट् लकार) – √पठ्, √खाद्, √पत्, √दृश्, √चल्, √गम्, √लिख्, √हस्, √नृत्, √धाव्, √नम्, √रुद्, √दा, √स्था, √पा, √वद्, √कृ, √भ्रम्, √पच्, √तृ, √चर्, √गर्ज्, √खेल्, √क्रीड्, √खन्, √क्षिप्, √भू, √अस्, √कूज्, √रक्ष्।
7. कारक एवं उपपद विभक्ति परिचय – आठों कारक विभक्तियों के चिह्न तथा सह, नमः, अलम्, बिना आदि उपपदों के विशेष नियम।
8. अव्ययपरिचयः – च, एव, न इत्यादि।
9. पर्यायाः विपर्ययाः च
10. वाक्य-रचना – कर्ता तथा क्रिया संबंध।
11. संख्याः – एक से बीस तथा एक से चार तीनों लिंगों में।
12. अशुद्धि-शोधनम् – लिंग, विभक्ति, वचन इत्यादि के अनुसार।
13. अपठित-अवबोधनम् – 40-50 शब्द परिमित एवं 70-80 शब्द परिमित।
14. चित्रवर्णनम् – चित्र को देखकर मंजूषा की सहायता से वाक्य निर्माण करना।
15. सङ्केताधारित-वार्त्तालापः – मंजूषा की सहायता से।

विषय-सूची

खण्ड 'क' (अनुप्रयुक्तं व्याकरणम्)

1. संस्कृतवर्णमाला 09
(अक्षर-ज्ञानम्, मात्रा-ज्ञानम्, वर्ण-विन्यासः च)

2. शब्दरूप-प्रकरणम् 23
(अकारान्त-पुंल्लिङ्ग-शब्दाः, आकारान्त-स्त्रीलिङ्ग-शब्दाः, अकारान्त-नपुंसकलिङ्ग-शब्दाः च)

3. धातुरूप-प्रकरणम् 51
(लट्लकारः, लृट्लकारश्च)

4. कारकाः विभक्तयः च 63

5. अव्ययाः 71

6. पर्यायाः एवम् विपर्ययाः 75

7. वाक्य-रचना 80

8. संख्याः 86

9. अशुद्धि-संशोधनम् 90

खण्ड 'ख' (रचनात्मकं कार्यम्)

10. चित्र-वर्णनम् 95

11. सङ्केताधारित-वार्त्तालापः 104

खण्ड 'ग' (अपठित-अवबोधनम्)

12. सरलाः गद्यांशाः 113

- अभ्यास-प्रश्नपत्रम् 132

शुरू से ही संस्कृत परीक्षा की तैयारी कैसे करें?

1. उच्चारण

- संस्कृत भाषा में उच्चारण का महत्व बहुत अधिक है। हम जैसा पढ़ते हैं वैसा ही लिखते हैं। शुद्ध पढ़ें तथा शुद्ध लिखें।
- ह्रस्व स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का (एक बार ताली बजाने जितना) समय लगता है तथा दीर्घ स्वरों के लिए दो मात्रा का (दो बार ताली बजाने जितना) समय लगता है।
- प्लुत स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व से तीन गुणा या उससे भी अधिक समय लगता है।
- **अ** से युक्त व्यंजनों को ध्यान से पढ़ें तथा बोलें, क्योंकि **अ** की कोई मात्रा नहीं होती।
- संयुक्त स्वरों को ध्यान से बोलें। संयुक्त वर्णों का उच्चारण करते समय शुद्ध व्यंजन से पहले वाले अक्षर पर बल देना चाहिए।
- ऋ तथा र वर्णों का उच्चारण ध्यान से करें।

2. लेखन

- प्रत्येक वर्ण को सुंदर व स्पष्ट लिखने का अभ्यास करें।
- संयुक्त वर्णों को विशेष ध्यान से लिखें।
- अनुस्वार का उच्चारण जहाँ हो उसी वर्ण के ऊपर उसे लिखना चाहिए; यथा–**संस्कृतम्।**
- स्वर से युक्त 'र' इत्यादि वर्ण शुद्ध व्यंजनों के नीचे लिखे जाएँगे; उदाहरणार्थ **शुद्धम्** पद में द् + ध वर्ण हैं। देखने में 'द्' स्वरयुक्त लगता है व 'ध' स्वरहीन, क्योंकि हमें लगता है कि 'पूर्ण' का स्थान ऊपर होता है। संस्कृत भाषा हमें विनम्रता सिखाती है। **पूर्णाक्षर** (स्वरयुक्त अक्षर) को विनम्रता से नीचे झुककर और **शुद्ध** (स्वर से रहित) व्यंजन को ऊपर रखकर सहारा देने का विधान करती है।
- पूरे अंक पाने हों तो अभ्यास प्रतिदिन करना चाहिए।

खण्ड 'क'

अनुप्रयुक्तं व्याकरणम्

1 संस्कृतवर्णमाला

1. अक्षर ज्ञानम्

संस्कृत वर्णमाला को अल् भी कह सकते हैं। विभिन्न प्रकार की ध्वनियों को वर्ण कहते हैं। ध्वनियों के संयोग से ही विभिन्न शब्द बनते हैं। संस्कृत वर्णमाला में कुल ४६ वर्ण हैं।

अ–अचलः = पहाड़

आ–आसन्दिका = कुर्सी

इ–इष्टका = ईंट

ई–ईश्वरः = भगवान

उ–उषा = सवेरा

ऊ–ऊर्णः = ऊन

ॐ भूर्भुवः स्वः ।
तत् सवितुर्वरेण्यं ।
भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

ऋ–ऋचा = ऋग्वेद का मंत्र

ऋ–ऋकारः = 'ऋ' अक्षर

ऌ–ऌकारः = 'ऌ' अक्षर

ए–एला = इलायची

ऐ–ऐरावतः = इंद्र का हाथी

ओ–ओषधिः = दवाई

औ–औदनिकः = रसोइया

क्–कन्दुकम् = गेंद

ख्–खर्जूरम् = खजूर

ग्–गजः = हाथी

घ्–घटिका = घड़ी

ङ्–ङकार: = 'ङ' वर्ण

च्–चित्रक: = चीता

छ्–छत्रम् = छतरी/छाता

ज्–जम्बीर: = नीम्बू

झ्–झष: = मछली

ञ्–ञकार: ='ञ' वर्ण

ट्–टिट्टिभ:= टिड्डा

ठ्–ठक्कार: = ठठेरा

ड्–डय: = उड़ान

ढ्–ढालम् = ढाल

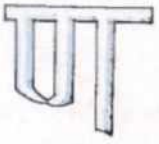

ण्–णकार:='ण' वर्ण

त्–तण्डुल: = चावल

थ्–थकार: = 'थ' वर्ण

द्–देश: = राष्ट्र/स्थान

ध्–धनम् = पैसा

न्–नापित: = नाई

प्–पथ: = रास्ता

फ्–फलकम् = फट्टा

ब्–बदरम् = बेर

भ्–भल्लुक: = भालू

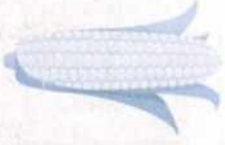

म्–मकाय = मकई

य्–यष्टि = छड़ी

र्–रजक: = धोबी

ल्–लशुनः = लहसुन

व्–वस्त्रम् = कपड़ा

श्–शंखः = शंख

ष्–षट्पदः = भौंरा

स्–सारमेयः = कुत्ता

ह्–हिमांशुः = चाँद

इस प्रकार संस्कृत वर्णमाला में 13 स्वर हैं :

स्वराः

जिन्हें बोलने के लिए किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं लेनी पड़ती है, वे स्वर होते हैं। इन्हें अच् भी कहते हैं।

ह्रस्व-स्वराः = 5, जिनको बोलने में एक मात्रा का समय लगता है–अ, इ, उ, ऋ, ऌ	**दीर्घ-स्वराः** = 4, जिनको बोलने में दो मात्रा का (ह्रस्व से दो गुणा) समय लगता है–आ, ई, ऊ, ॠ	**संयुक्त-स्वराः** = 4, जो दो स्वरों को मिलाकर बने हों–ए, ऐ, ओ, औ	**प्लुत** = जिनको बोलने में ह्रस्व से तीन गुणा या उससे भी अधिक समय लगता है–ओ३म्, राऽऽऽम

33 व्यञ्जनानि = हल् – जिन्हें बिना स्वर की सहायता के नहीं बोला जा सकता।

कु	=	कवर्गः =	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्	
चु	=	चवर्गः =	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	
टु	=	टवर्गः =	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	स्पर्श व्यञ्जनानि = 25
तु	=	तवर्गः =	त्	थ्	द्	ध्	न्	
पु	=	पवर्गः =	प्	फ्	ब्	भ्	म्	
			य्	र्	ल्	व्		अन्तःस्थ-व्यञ्जनानि = 4
			श्	ष्	स्	ह्		ऊष्म-व्यञ्जनानि = 4
			ं (अनुस्वारः)		ः (विसर्गः)			स्वरों के बाद लगने वाले अयोगवाह इनका उच्चारण स्वतंत्र रूप से नहीं होता।

2. मात्रा-ज्ञानम्

जब किसी व्यंजन में कोई स्वर मिलाया जाता है तो उसका हल् चिह्न (्) लुप्त हो जाता है और वह स्वरयुक्त या सस्वर व्यंजन बन जाता है। हम इसे इस तरह भी समझ सकते हैं :

उदाहरण–

क्	+	अ	=	क	ब्	+	ऋ	=	बृ
ख्	+	आ	=	खा	भ्	+	ऌ	=	भ्ऌ
ग्	+	इ	=	गि	म्	+	ए	=	मे
घ्	+	ई	=	घी	य्	+	ऐ	=	यै
ङ्	+	उ	=	ङु	र्	+	ओ	=	रो
फ्	+	ऊ	=	फू	व्	+	औ	=	वौ
ल्	+	ऋ	=	लृ					

संयुक्त वर्णाः

दो व्यंजन मिलकर संयुक्त वर्ण बनाते हैं।

क्	+	ष्	=	= क्ष् क्ष् + अ = क्ष	द्	+	य्	=	= द्य् द्य् + अ = द्य
त्	+	र्	=	= त्र् त्र् + अ = त्र	स्	+	र्	=	= स्र् स्र् + अ = स्र
ज्	+	ञ्	=	= ज्ञ् ज्ञ् + अ = ज्ञ	प्	+	र्	=	= प्र् प्र् + अ = प्र
द्	+	व्	=	= द्व् द्व् + अ = द्व	क्	+	व्	=	= क्व् क्व् + अ = क्व
द्	+	ध्	=	= द्ध् द्ध् + अ = द्ध	श्	+	र्	=	= श्र् श्र् + अ = श्र
ह्	+	य्	=	= ह्य् ह्य् + अ = ह्य	ह्	+	र्	=	= ह्र् ह्र् + अ = ह्र

हलन्त

हल् (्) हो जिस शब्द के अंत में उसे हलन्त कहते हैं; यथा–**देवम्** शब्द हलन्त है। इसका चिह्न (्) तिरछी रेखा के रूप में वर्णों के नीचे लगाया जाता है। शुद्ध अथवा हल् व्यंजनों के नीचे ही हल् चिह्न लगाया जाता है। वर्णों में स्वर मिलने के बाद इसका लोप हो जाता है। यथा–

ख् या ख + अ = ख

प् या प + अ = प

ग् या ग + अ = ग

3. वर्ण-संयोजनम्

दिए गए स्वर एवं व्यंजन वर्णों को जोड़कर सार्थक पद बनाने की प्रक्रिया को वर्ण-संयोजन कहते हैं।

उदाहरण :

1. क् + अ + ट् + अ: = कट:
2. आ + र् + आ + म् + ए + ष् + उ = आरामेषु
3. आ + क् + आ + श् + अ: = आकाश:
4. अ + ग् + न् + इ: = अग्नि:
5. आ + प् + अ + ण् + अ: = आपण:
6. ई + र् + अ + न् + औ + क् + आ = ईरनौका
7. ख् + आ + ण् + ड् + अ + व् + अ: = खाण्डव:
8. क् + अ + र् + ण् + आ + भ् + य् + आ + म् = कर्णाभ्याम्
9. क + अ + न् + द् + उ + क् + आ + न् + इ = कन्दुकानि
10. ख् + अ + र् + अ: = खर:
11. आ + स् + अ + न् + द् + इ + क् + आ: = आसन्दिका:
12. ग् + ए + ह् + ए = गेहे
13. स् + आ + र् + इ + क् + आ + य् + आ: = सारिकाया:
14. श् + उ + क् + अ + स् + य् + अ = शुकस्य
15. ह् + इ + म् + अ + क् + अ + र् + अ + म् = हिमकरम्
16. ल् + अ + व् + अ + ण् + अ + म् = लवणम्
17. व् + स् + उ + ध् + आ = वसुधा
18. म् + आ + त् + ऋ + भ् + ऊ + म् + इ: = मातृभूमि
19. प् + इ + त् + उ: = पितु:
20. अ + त् + इ + थ् + इ: = अतिथि:

21. ल् + अ + क् + ष् + म् + ई + ध् + अ + र् + अः = लक्ष्मीधरः
22. ह् + अ + स् + त् + ई = हस्ती
23. द् + ए + श् + अ + स् + य् + अ = देशस्य
24. प् + अ + र् + ण् + आ + ण् + इ = पर्णानि
25. ग् + अ + ण् + अ + न् + आ + म् = गणनाम्
26. व् + इ + ज् + ञ् + आ + न् + अ + म् = विज्ञानम्
27. द् + ए + श् + अ + स् + य् + अ = देशस्य
28. आ + स् + अ + न् + ए = आसने
29. स् + अ + ज् + ज् + अ + न् + अः = सज्जनः
30. उ + ल् + ल् + ए + ख् + अः = उल्लेखः
31. म् + ऊ + र् + ख् + आः = मूर्खाः
32. स् + उ + ख् + आ + न् + त् + अः = सुखान्तः
33. र् + अ + त् + न् + अ + म् = रत्नम्
34. श् + अ + र् + अः = शरः
35. अ + भ् + ई + ष् + ट् + अः = अभीष्टः
36. ऋ + ष् + इ + भ् + इः = ऋषिभिः
37. ज् + अ + न् + अ + न् + ई = जननी
38. प् + उ + र् + उ + ष् + ओ + त् + त् + अ + म् + अः = पुरुषोत्तमः
39. स + अ + त् + व् + अ + र् + अ + म् = सत्वरम्
40. भ् + आ + ष् + आ + ण् + आ + म् = भाषाणाम्
41. द् + ई + प् + अ + म् + आ + ल् + आ = दीपमाला
42. व् + अ + ल् + ल् + अ + र् + ई = वल्लरी
43. व् + य् + आ + क् + अ + र् + अ + ण् + अ + म् = व्याकरणम्
44. व् + अ + र् + अ + द् + आ = वरदा
45. म् + अ + ह् + ई + प् + अ + त् + इः = महीपतिः
46. ध् + ऊ + म् + अः = धूमः
47. त् + अ + म् + अ + स् + अः = तमसः
48. ब् + इ + ड् + आ + ल् + अः = बिडाल
49. क् + अ + व् + इः = कविः
50. ज् + अ + म् + ब् + ई + र् + अ + म् = जम्बीरम्
51. प् + ऊ + ज् + आ = पूजा
52. ए + क् + अ + त् + आ = एकता
53. स् + न् + ए + ह् + आ = स्नेहा
54. प् + र् + इ + य् + आ = प्रिया
55. स + अ + म् + ई + प् + अ + म् = समीपम्

4. वर्ण-विन्यासः

शब्द जिन वर्णों से बना हो उन सबको अलग-अलग कर देना ही वर्ण-विन्यास अथवा वर्ण-विच्छेद कहलाता है।

उदाहरण :

1. बालकस्य = ब् + आ + ल् + अ + क् + अ + स् + य् + अ
2. लतायाम् = ल् + अ + त् + आ + य् + आ + म्
3. मुनिषु = म् + उ + न् + इ + ष् + उ
4. गर्वः = ग् + अ + र् + व + अः
5. वृक्षेषु = व + ऋ + क् + ष् + ए + ष् + उ
6. नयनाभ्याम् = न् + अ + य् + अ + न् + आ + भ् + य् + आ + म्
7. नद्याम् = न् + अ + द् + य् + आ + म्
8. मातृणाम् = म् + आ + त् + ऋ + ण् + आ + म्
9. बालिकायाः = ब् + आ + ल् + इ + क् + आ + य् + आः
10. छात्राणाम् = छ् + आ + त् + र् + आ + ण् + आ + म्
11. पुष्पेभ्यः = प् + उ + ष् + प् + ए + भ् + य् + अः
12. मीनायै = म् + ई + न् + आ + य् + ऐ
13. गजानाम् = ग् + अ + ज् + आ + न् + आ + म्
14. कपोतेषु = क् + अ + प् + ओ + त् + ए + ष् + उ
15. श्रीमान् = श् + र् + ई + म् + आ + न्
16. केयूराणि = क् + ए + य् + ऊ + र् + आ + ण् + इ
17. उष्ट्रौ = उ + ष् + ट् + र् + औ
18. वृक्षेषु = व् + ऋ + क् + ष् + ए + ष् + उ
19. सूर्यस्य = स् + ऊ + र् + य् + अ + स् + य् + अ
20. मृगात् = म् + ऋ + ग् + आ + त्
21. मयूराणाम् = म् + अ + य् + ऊ + र् + आ + ण् + आ + म्
22. पुस्तकेषु = प् + उ + स् + त् + अ + क् + ए + ष् + उ
23. फलानाम् = फ् + अ + ल् + आ + न् + आ + म्
24. लताभिः = ल् + अ + त् + आ + भ् + इः
25. फलाय = फ् + अ + ल् + आ + य् + अ
26. कुक्कुरात् = क् + उ + क् + क् + उ + र् + आ + त्

27. श्रावणे = श् + र् + आ + व् + अ + ण् + ए
28. वृक्षाभ्याम् = व् + ऋ + क् + ष् + आ + भ् + य् + आ + म्
29. दम्पतिः = द् + अ + म् + प् + अ + त् + इः
30. प्रयासः = प् + र् + अ + य् + आ + स् + अः
31. प्रजा = प् + र् + अ + ज् + आ
32. नेत्रे = न् + ए + त् + र् + ए
33. प्रणामः = प् + र् + अ + ण् + आ + म् + अः
34. धरायाम् = ध् + अ + र् + आ + य् + आ + म्
35. वनस्थः = व् + अ + न् + अ + स् + थ् + अः
36. कमलानि = क् + अ + म् + अ + ल् + आ + न् + इ
37. शशकाः = श् + अ + श् + अ + क् + आः
38. शकटे = श् + अ + क् + अ + ट् + ए
39. तेनालीरामः = त् + ए + न् + आ + ल् + ई + र् + आ + म् + अः
40. देवालयः = द् + ए + व् + आ + ल् + अ + य् + अः
41. कृष्णः = क् + ऋ + ष् + ण् + अः
42. कलमः = क् + अ + ल् + अ + म् + अः
43. छागः = छ् + आ + ग् + अः
44. कृषकः = क् + ऋ + ष् + अ + क् + अः
45. ललने = ल् + अ + ल् + अ + न् + ए
46. आभूषणानि = आ + भ् + ऊ + ष् + अ + ण् + आ + न् + इ
47. इष्टकाभिः = इ + ष् + ट् + अ + क् + आ + भ् + इः
48. मात्रा = म् + आ + त् + र् + आ
49. शय्यासु = श् + अ + य् + य् + आ + स् + उ
50. घोटकाय = घ् + ओ + ट् + अ + क् + आ + य् + अ
51. सूदाः = स् + ऊ + द् + आः
52. भगिनीभिः = भ् + अ + ग् + इ + न् + ई + भ् + इः
53. विद्याम् = व् + इ + द् + य् + आ + म्
54. उदधिः = उ + द् + अ + ध् + इः
55. नाटकेषु = न् + आ + ट् + अ + क् + ए + षु

ध्यातव्यम्

- एक ही ध्वनि से अनेक शब्द शुरू हो सकते हैं।
- संस्कृत भाषा में 'ऌ' एक स्वर है।
- ऌ स्वर का दीर्घ नहीं होता।
- प्रत्येक ध्वनि के उच्चारण के लिए हमारे मुख के अंदर विशेष अंग विशेष प्रयास करते हैं।
- शुद्ध व्यंजन स्वरों की सहायता के बिना नहीं बोले जा सकते हैं।
- शुद्ध व्यंजनों के उच्चारण के लिए उससे पूर्व ध्वनि पर अधिक बल दिया जाता है।
- संयोग होने पर शुद्ध व्यंजनों को ऊपर तथा सस्वर व्यंजन को नीचे स्थान दिया जाता है।
- 'ध' तथा 'घ', ऌ तथा ल इत्यादि एक जैसे दिखने वाले वर्णों को ध्यान से बोलें व लिखें।
- अंतिमाक्षर का उच्चारण पूरे ध्यान से करें।
- ह्रस्व 'अ' से युक्त वर्णों के उच्चारण का भी विशेष ध्यान रखें, क्योंकि 'अ' की कोई मात्रा वर्णों के साथ नहीं लगती।
- वर्ण-विन्यास करते समय विसर्ग (:) को अंतिम स्वर के बाद ही लिखना चाहिए।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. विभिन्न ध्वनियाँ ही वर्ण कहलाती हैं।
2. ध्वनियों के संयोग को शब्द कहते हैं।
3. व्यंजन वर्ण 33 होते हैं।
4. स्वरों के बिना लिखे जाने पर व्यंजनों के नीचे हल् चिह्न (्) लगता है।
5. ह्रस्व स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा, दीर्घ स्वरों के उच्चारण में दो मात्रा तथा प्लुत स्वरों के उच्चारण में तीन मात्रा (ह्रस्व स्वर से तीन गुणा) का समय लगता है।
6. दो स्वरों के मिलने से संयुक्त स्वर बनते हैं।
7. अनुस्वार (ं) तथा विसर्ग (:) स्वरों के बाद लगते हैं। इनका उच्चारण व प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं होता।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. अधोदत्तं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायाः सहायतया रिक्तस्थानानि पूरयत।

(नीचे दिए गए चित्र को देखकर मंजूषा की सहायता से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

1. = ...

2. = ...

3. = ...

4. = ...

5. = ...

6. = ...

7. = ...

8. = ...

9. = ...

10. = ...

मीनः, यष्टिः, पलाण्डुः, आम्रम्, नापितः, देशः, ऋषिः, शुकः, रजकः, मकायः।

II. अधोलिखितेषु व्यञ्जनेषु स्वराणाम् संयोजनम् विभाजनम् वा कुरुत।

(नीचे लिखे व्यंजनों में स्वरों को जोड़िए अथवा अलग कीजिए।)

1. ज् + ऋ = ...
2. न् + ऐ = ...
3. स् + उ = ...
4. द् + ध् + ई = ...
5. व + आ = ...
6. म् + ऋ = ...
7. ह = ...
8. क + ऊ = ...
9. सौ = ...
10. ष्ट + इ = ...

11. च् + ऐ = ... 16. प् + आ = ...

12. सा = ... 17. व् + ऋ = ...

13. त् + औ = ... 18. म् + इ = ...

14. ते = ... 19. टु = ...

15. ताः = ... 20. नु = ...

III. अधोलिखितेषु संयुक्तव्यञ्जनेषु के द्वे वर्णे स्तः? लिखत।

(नीचे लिखे संयुक्त व्यंजन किन दो वर्णों से मिलकर बने हैं? लिखिए।)

1. द्या = ... + ... + आ (द् + य्/द् + व)

2. द्वि = ... + ... + इ (द् + व्/द् + व)

3. ध्यै = ... + ... + ऐ (ध + य्/ध् + य्)

4. ज्ञ = ... + ... + अ (ग् + य/ज् + ञ्)

5. त्रि = ... + ... + इ (त् + र्/त + र्)

6. क्षा = ... + ... + आ (क् + श्/क् + ष)

7. द्धि = ... + ... + इ (द् + ध/द् + ध्)

8. प्र = ... + ... + अ (क् + र्/प् + र्)

9. क्रि = ... + ... + इ (क् + र्/क + र्)

10. ह्ल = ... + ... + अ (ह् + ल्/ह् + ल्)

11. द्र = ... + ... + अ (ट् + र/द् + र्)

12. श्रु = ... + ... + उ (श् + र्/म् + र्)

13. घ्र = ... + ... + अ (घ् + र्/घ् + र्)

14. व्र = ... + ... + अ (व् + र/व् + र्)

15. न्या = ... + ... + आ (न् + य/न् + य्)

16. ह्र = ... + ... + अ (ह् + र्/ह + र्)

IV. निम्नलिखितेषु वर्णेषु दीर्घस्वरान् पृथक् कृत्वा लिखत।

(निम्नलिखित वर्णों में से दीर्घ स्वरों को अलग करके लिखिए।)

आ, इ, ऊ, ए, अ, ई, ऐ, ऌ, ॠ, उ, ॠ

.....

V. अधोलिखितवर्णेषु स्वरान् व्यञ्जनान् च पृथक् कृत्वा उचित वर्गेषु लिखत।

(नीचे लिखे वर्णों में से स्वर तथा व्यंजनों को अलग करके उचित वर्ग में लिखिए।)

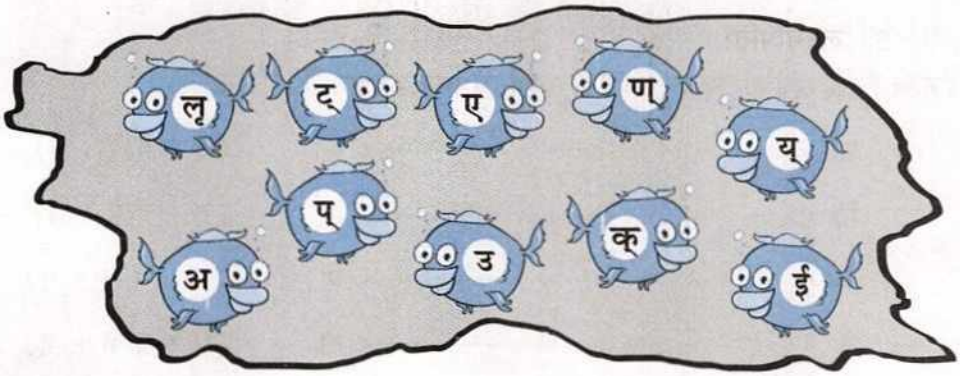

स्वराः	व्यञ्जनानि
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

VI. निम्नलिखितवर्गानां वर्णान् क्रमानुसारं लिखत।

(नीचे लिखे वर्गों के वर्ण को क्रम के अनुसार लिखिए।)

कवर्ग	=	ग्, ङ्, ख्, घ्, क्	.....
चवर्ग	=	छ्, झ्, च्, ज्, ञ्	.....
टवर्ग	=	ण्, ठ्, ढ्, ड्, ट्	.....
तवर्ग	=	थ्, न्, ध्, द्, त्	.....
पवर्ग	=	फ्, प्, म्, भ्, ब्	.....

VII. अधोलिखितशब्दानाम् वर्णविश्लेषणम् कुरुत।

(नीचे लिखे शब्दों का वर्ण-विन्यास कीजिए।)

1. रश्मिः = ...
2. रजकेषु = ...
3. संस्कृतम् = ...
4. कृपया = ...
5. लक्ष्मीपतिः = ...
6. कृश् = ...
7. लम्बोदराय = ...
8. दण्डिनः = ...
9. चक्राणाम् = ...
10. ऐरावतः = ...

VIII. अधोलिखितवर्णानाम् संयोगं कुरुत।

(नीचे लिखे वर्णों को जोड़िए।)

1. छ् + अ + त् + र् + अ + म् = ...
2. अ + न् + इ + ल् + आः = ...
3. म् + अ + य् + ऊ + र् + औ = ...
4. क् + उ + क् + क् + उ + ट + अ + म् = ...
5. म् + ऋ + ग् + औ = ...
6. क् + अ + प् + ओ + त् + अ + म् = ...
7. क् + आ + क् + ई = ...
8. प् + इ + क् + अ + स् + य् + अ = ...
9. क् + अ + म् + अ + ल् + आ + न् + इ = ...
10. ल् + अ + त् + ए = ...

IX. निम्नलिखितान् वर्णान् उचितशीर्षकस्य अधः लिखत।

(नीचे लिखे पदों को उचित शीर्षक के नीचे लिखिए।)

ओ३, ई, उ, ॠ, क्, ण्, ट्, हेऽऽऽ, प्, फ्, य्, अ, अं, ऊ, ख्, ठ्, द्, आऽऽ, इ, ऋ, ऌ, ग्, न्, अः, छ्, ञ्, ङ्, घ्, ज्, च्, ड्, त्, ऐ, झ्, ओ, थ्, ढ्, ब्, ध्, औ, भ्, म्, श्, ल्, स्, र्, ष्, व्, ह्

ह्रस्वस्वराः	दीर्घस्वराः	संयुक्तस्वराः	प्लुत स्वराः
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

कवर्गः	चवर्गः	टवर्गः	तवर्गः
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

पवर्गः	अन्तस्थ-व्यञ्जनानि	ऊष्म-व्यञ्जनानि	अयोगवाहाः
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

2 शब्दरूप-प्रकरणम्

संस्कृत भाषा में निम्नलिखित तीन लिंग होते हैं :

1. पुंल्लिङ्ग 2. स्त्रीलिङ्ग 3. नपुंसकलिङ्ग।

प्रत्येक लिंग के शब्दों के रूप अलग-अलग चलते हैं। जिस वर्ण से शब्द समाप्त हो रहा हो, उस वर्ण के पीछे **कार** लिख देते हैं; जैसे-'अ' को 'अकार,' 'इ' 'ई' तथा 'त्' को क्रमशः 'इकार', 'ईकार' तथा 'तकार' कह सकते हैं।

हम यह कह सकते हैं कि संस्कृत में अकेले वर्ण को भाषा में चलने के लिए

दे दी जाती है; यथा-'च्' + कार = चकार 'आ' + कार = आकार इत्यादि।

इसी तरह आकारान्त = आ से अन्त होने वाले, अकारान्त = 'अ' से अन्त होने वाले, इकारान्त = इ से अन्त होने वाले शब्द हैं।

समान ध्वनि (अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त, तकारान्त इत्यादि) एवं समान लिंग (पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग) के सभी शब्दों के रूप (कभी-कभी थोड़े से अंतर के साथ) प्रायः एक जैसे ही चलते हैं।

1. अकारान्त-पुंल्लिङ्ग-शब्दाः

'अ' अर्थात् अकार से अन्त होने वाले शब्द (अकार + अन्त) अकारान्त कहलाते हैं। अकारान्त पुंल्लिंग शब्दों को विसर्ग (:) लगाकर लिखा जाता है। कुछ अकारान्त पुंल्लिंग शब्द इस प्रकार हैं :

देश: = राष्ट्र

मृग: = हिरन

बाल: = लड़का

मूषक: = चूहा

मकर: = मगरमच्छ

हंस: = हंस

शिक्षक:= आचार्य

अनल: = आग

शशक: = खरगोश

उलूक: = उल्लू

सागर: = समुद्र

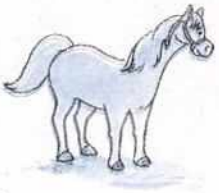

अश्व: = घोड़ा

देव: = देवता

व्याघ्र: = बाघ

वानर:/मरकट: = बंदर

पुत्र:/सुत: = बेटा

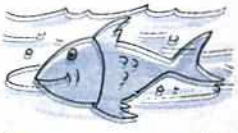

मीन: = मछली

नृप: = राजा

बिडाल: = बिल्ला

कुक्कुट:= मुर्गा

कुक्कुर: = कुत्ता

शुक: = तोता

रासभ:/गर्दभ:/खर: = गधा

कपोत: = कबूतर

आवासः = घर

पिकः/ कोकिलः = कोयल

उष्ट्रः = ऊँट

मेघः = बादल

पवनः = हवा

श्येनः = बाज

उष्ट्रग्रीवः= जिराफ

वकः = बगुला

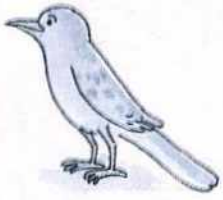

चटकः = चिड़िया

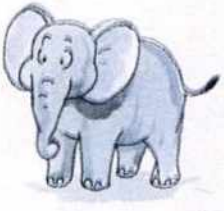

गजः = हाथी

रजकः = धोबी

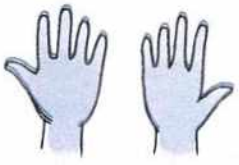

हस्तः/करः = हाथ

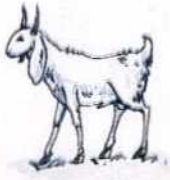

छागः/अजः = बकरा

केशः = बाल

सिंहः = शेर

कृषकः = किसान

खगः/विहगः = पक्षी

स्यूतः = जेब/ पाकेट/थैला

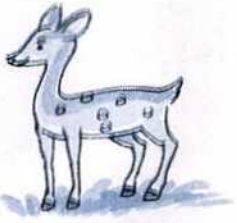

रोहितः = लाल हिरण

लाहलः = कोयला

काकः = कौआ

यवः = जौ

चमसः = बड़ा चम्मच

घोटकः = घोड़ा

तरुः = पेड़

कायः = शरीर

ऋक्षः/भल्लुकः = भालू

सूदः/पाचकः = रसोइया

मण्डूकः = मेंढक

पादपः = पौधा

यूषः = रस/जूस

घटः = घड़ा

चणकः = चना

ठक्कारः = ठठेरा

कुम्भकारः = कुम्हार

अङ्गुष्ठः = अँगूठा

सौचिकः = दर्जी

नर्तकः = नाचने वाला

अश्वत्थः = पीपल

पण्यकः = दुकानदार

शार्दूलः = चीता

चरणः = पाँव

अवकरः = कूड़ा

क्रोडः = गोद

इन सभी शब्दों के रूप प्राय: एक समान चलेंगे। उदाहरण के लिए अर्थ के साथ यह शब्द-रूप देखिए:

शशक शब्द के रूप

कारक	विभक्तियाँ	चिह्न	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
कर्ता	प्रथमा	ने (-)	शशक: (एक खरगोश ने)	शशकौ (दो खरगोशों ने)	शशका: (अनेक खरगोशों ने)
कर्म	द्वितीया	को	शशकम् (एक खरगोश को)	शशकौ (दो खरगोशों को)	शशकान् (अनेक खरगोशों को)
करण	तृतीया	से, के द्वारा	शशकेन (एक खरगोश से/के द्वारा)	शशकाभ्याम् (दो खरगोशों से/के द्वारा)	शशकै: (अनेक खरगोशों से/के द्वारा)
सम्प्रदान	चतुर्थी	के लिए	शशकाय (एक खरगोश के लिए)	शशकाभ्याम् (दो खरगोशों के लिए)	शशकेभ्य: अनेक खरगोशों के लिए
अपादान	पंचमी	से (अलग)	शशकात् [एक खरगोश से (अलग)]	शशकाभ्याम् (दो खरगोशों से)	शशकेभ्य: (अनेक खरगोशों से)
संबंध	षष्ठी	का, के की, रा, रे, री	शशकस्य (एक खरगोश का/के/की)	शशकयो: (दो खरगोशों का/के/की)	शशकानाम् (अनेक खरगोशों का/के/की)
अधिकरण	सप्तमी	में, पर	शशके (एक खरगोश में/पर)	शशकयो: (दो खरगोशों में/पर)	शशकेषु (अनेक खरगोशों में/पर)
सम्बोधन	-	हे, भो, अरे	हे शशक! (अरे एक खरगोश!)	हे शशकौ! (हे दो खरगोशो!)	हे शशका:! (हे अनेक खरगोशो!)

ठीक इसी प्रकार अन्य रूपों के अर्थ भी जाने जा सकते हैं। कुछ अन्य रूप देखिए :

मेघ (बादल) अकारान्त पुंल्लिङ्ग

विभक्तियाँ	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मेघः	मेघौ	मेघाः
द्वितीया	मेघम्	मेघौ	मेघान्
तृतीया	मेघेन	मेघाभ्याम्	मेघैः
चतुर्थी	मेघाय	मेघाभ्याम्	मेघेभ्यः
पंचमी	मेघात्	मेघाभ्याम्	मेघेभ्यः
षष्ठी	मेघस्य	मेघयोः	मेघानाम्
सप्तमी	मेघे	मेघयोः	मेघेषु
सम्बोधन	हे मेघ!	हे मेघौ!	हे मेघाः!

वृक्ष (पेड़) अकारान्त पुंल्लिङ्ग

विभक्तियाँ	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वृक्षः	वृक्षौ	वृक्षाः
द्वितीया	वृक्षम्	वृक्षौ	वृक्षान्
तृतीया	वृक्षेण	वृक्षाभ्याम्	वृक्षैः
चतुर्थी	वृक्षाय	वृक्षाभ्याम्	वृक्षेभ्यः
पंचमी	वृक्षात्	वृक्षाभ्याम्	वृक्षेभ्यः
षष्ठी	वृक्षस्य	वृक्षयोः	वृक्षाणाम्
सप्तमी	वृक्षे	वृक्षयोः	वृक्षेषु
सम्बोधन	हे वृक्ष!	हे वृक्षौ!	हे वृक्षाः!

इसी तरह मेघ या वृक्ष इत्यादि के स्थान पर किसी दूसरे अकारान्त पुंल्लिग शब्द को रखकर रूप बनाए जा सकते हैं। उदाहरण–अश्वः अश्वौ अश्वाः इत्यादि।

अज (बकरा) अकारान्त पुंल्लिङ्ग

विभक्तियाँ	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अजः	अजौ	अजाः
द्वितीया	अजम्	अजौ	अजान्
तृतीया	अजेन	अजाभ्याम्	अजैः
चतुर्थी	अजाय	अजाभ्याम्	अजेभ्यः
पंचमी	अजात्	अजाभ्याम्	अजेभ्यः
षष्ठी	अजस्य	अजयोः	अजानाम्
सप्तमी	अजे	अजयोः	अजेषु
सम्बोधन	हे अज!	हे अजौ!	हे अजाः!

देव (देवता) अकारान्त पुंल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	देवः	देवौ	देवाः
द्वितीया	देवम्	देवौ	देवान्
तृतीया	देवेन	देवाभ्याम्	देवैः
चतुर्थी	देवाय	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
पंचमी	देवात्	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
षष्ठी	देवस्य	देवयोः	देवानाम्
सप्तमी	देवे	देवयोः	देवेषु
सम्बोधन	हे देव!	हे देवौ!	हे देवाः!

राम (अकारान्त पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पंचमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
संबोधन	हे राम!	हे रामौ!	हे रामाः!

विशेष–रामेण तथा रामाणाम् में **न** के स्थान पर **ण** है, क्योंकि नियम है कि **र्, ऋ** तथा **ष्** के बाद यदि **न** आ जाए तो **न** का **ण** हो जाता है। किंतु **न्** के हलन्त होने पर **न्** का **ण** नहीं होता; यथा–रामान्।

2. आकारान्त-स्त्रीलिङ्ग-शब्दाः

'आ' अर्थात् आकार से अंत होने वाले शब्द आकारान्त कहलाते हैं। कुछ आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द इस प्रकार हैं :

इन्दिरा/रमा = लक्ष्मी

निशा = रात

शिखा = चोटी

माला = हार

शाला = घर

पाठशाला = विद्यालय

भार्या = पत्नी

कन्या = लड़की, बाला

छात्रा = पढ़ने वाली लड़की

क्रीडा = खेल

भिक्षा = भीख

ईरनौका = मोटरबोट

कला = मिनट

जिह्वा/रसना = जीभ

ललना/ महिला = औरत

चटका = चिड़िया

वाटिका = बगीचा

धरा = धरती

वर्षा = बरसात

अध्यापिका = शिक्षिका

कक्षा = कमरा, श्रेणी

प्रजा = संतान

शिला = पत्थर

बाला/बालिका = लड़की

कला = हुनर/गुण

ग्रीवा = गर्दन

कलिका = कली

मक्षिका = मक्खी

मुक्ता = मोती

सारिका = मैना

शाटिका = साड़ी

दोला = झूला

इन सभी के रूप एक समान चलेंगे। कुछ आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप इस प्रकार हैं :

लता (बेल) आकारान्त स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पंचमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधन	हे लते !	हे लते !	हे लताः !

रमा (लक्ष्मी) आकारान्त स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रमा	रमे	रमाः
द्वितीया	रमाम्	रमे	रमाः
तृतीया	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
चतुर्थी	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
पंचमी	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
षष्ठी	रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
सप्तमी	रमायाम्	रमयोः	रमासु
सम्बोधन	हे रमे!	हे रमे!	हे रमाः!

निशा (रात) आकारान्त स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालिका	बालिके	बालिकाः
द्वितीया	बालिकाम्	बालिके	बालिकाः
तृतीया	बालिकया	बालिकाभ्याम्	बालिकाभिः
चतुर्थी	बालिकायै	बालिकाभ्याम्	बालिकाभ्यः
पंचमी	बालिकायाः	बालिकाभ्याम्	बालिकाभ्यः
षष्ठी	बालिकायाः	बालिकयोः	बालिकानाम्
सप्तमी	बालिकायाम्	बालिकयोः	बालिकासु
सम्बोधन	हे बालिके!	हे बालिके!	हे बालिकाः!

3. अकारान्त-नपुंसकलिङ्ग-शब्दाः

कुछ अकारान्त नपुंसकलिंग शब्द इस प्रकार हैं :

फलम् = फल

उद्यानम् = बगीचा

पत्रम् = पत्ता

पुष्पम् = फूल

गृहम् = घर

मुखम् = चेहरा (मुँह)

आम्रम् = आम

वनम् = जंगल

वसनम्/वस्त्रम् = कपड़ा

चक्रम् = पहिया

धनम् = धन

रत्नम् = रत्न

पुण्यम् = पुण्य

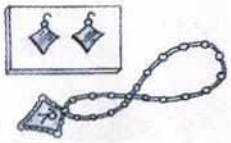

स्वर्णम् = सोना

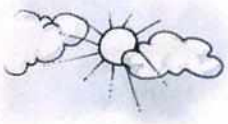

गगनम् = आकाश

कार्यम् = काम

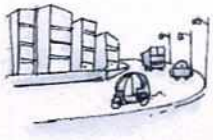

नगरम् = शहर

उदरम् = पेट

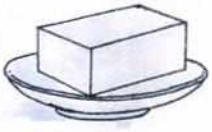

नवनीतम् = मक्खन

कमलम् = कमल का फूल

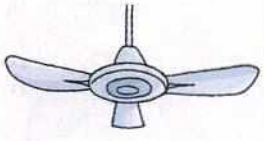

व्यजनम् = पंखा

ललाटम् = माथा

दाडिमम् = अनार

मूलकम् = मूली

आर्द्रकम् = अदरक

लशुनम् = लहसुन

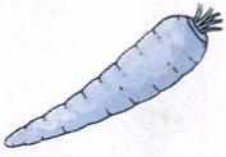

गृञ्जनम् = गाजर

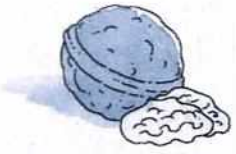

अक्षोटम् = अखरोट

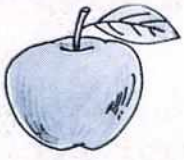

सेवम् = सेब

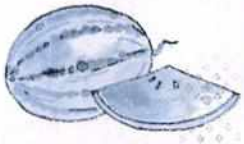

तारबूजम् = तरबूज

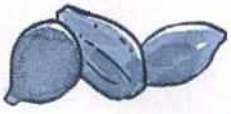

वातादम् = बादाम

तूतम् = शहतूत

नारिकेलम् = नारियल

कूर्चम् = दाढ़ी

द्विदलम् = दाल

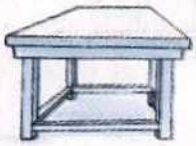

फलकम् = मेज

मित्रम् = दोस्त

नयनम्/नेत्रम्/लोचनम् = आँख

भोजनम् = खाना

आभूषणम् = गहना

फेनकम् = साबुन

छत्रम् = छतरी

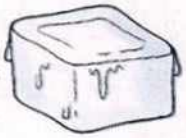

हिमम् = बर्फ

वायुयानम् = हवाई जहाज़

जलम् = पानी

कन्दुकम् = गेंद

मूलम् = जड़

नारङ्गम् = संतरा

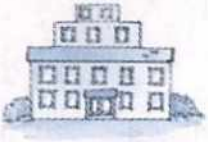

भवनम् = मकान

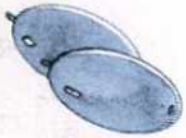

जम्बूफलम् = जामुन

बदरीफलम् = बेर

शीर्षम् = सिर

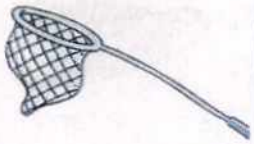

जालम् = जाली

अन्नम् = अनाज

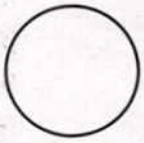

वर्तुलम् = गोल

मुकुटम् = मुकुट

इन सभी के रूप प्रथमा, द्वितीया तथा संबोधन को छोड़कर प्रायः अकारान्त पुंल्लिंग के समान चलते हैं। कुछ अकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के रूप इस प्रकार हैं :

फल (फल) अकारान्त नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फल म्	फले	फल ानि
द्वितीया	फल म्	फले	फल ानि
तृतीया	फले न	फल ाभ्याम्	फलै :
चतुर्थी	फल ाय	फल ाभ्याम्	फले भ्य:
पंचमी	फल ात्	फल ाभ्याम्	फले भ्य:
षष्ठी	फल स्य	फल योः	फल ानाम्
सप्तमी	फले	फल योः	फले षु
संबोधन	हे फल !	हे फले !	हे फल ानि !

पुस्तक (किताब) अकारान्त नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पुस्तक म्	पुस्तके	पुस्तक ानि
द्वितीया	पुस्तक म्	पुस्तके	पुस्तक ानि
तृतीया	पुस्तके न	पुस्तक ाभ्याम्	पुस्तकै :
चतुर्थी	पुस्तक ाय	पुस्तक ाभ्याम्	पुस्तके भ्य:
पंचमी	पुस्तक ात्	पुस्तक ाभ्याम्	पुस्तके भ्य:
षष्ठी	पुस्तक स्य	पुस्तक योः	पुस्तक ानाम्
सप्तमी	पुस्तके	पुस्तक योः	पुस्तके षु
संबोधन	हे पुस्तक !	हे पुस्तके !	हे पुस्तक ानि !

मित्र (दोस्त) अकारान्त नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मित्र म्	मित्रे	मित्र ाणि
द्वितीया	मित्र म्	मित्रे	मित्र ाणि
तृतीया	मित्रे ण	मित्र ाभ्याम्	मित्रै :
चतुर्थी	मित्र ाय	मित्र ाभ्याम्	मित्रे भ्य:
पंचमी	मित्र ात्	मित्र ाभ्याम्	मित्रे भ्य:
षष्ठी	मित्र स्य	मित्र योः	मित्र ाणाम्
सप्तमी	मित्रे	मित्र योः	मित्रे षु
संबोधन	हे मित्र !	हे मित्रे !	हे मित्र ाणि !

4. सर्वनामशब्दाः

तत् = वह (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पंचमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

तत् = वह (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पंचमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

तत् = वह (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि

(शेष रूप पुंल्लिग के समान होते हैं।)

एतत् = यह (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषः	एतौ	एते
द्वितीया	एतम्	एतौ	एतान्
तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतैः

चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पंचमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु

एतत् = यह (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एताम्	एते	एताः
तृतीया	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पंचमी	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
षष्ठी	एतस्याः	एतयोः	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयोः	एतासु

एतत् = यह (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एतत्	एते	एतानि
द्वितीया	एतत्	एते	एतानि

(शेष रूप पुंल्लिंग के समान होंगे।)

किम् = कौन (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

किम् = क्या (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पंचमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

सर्वनाम शब्दों के संबोधन नहीं हो सकते। संबोधन केवल संज्ञा तथा विशेषण आदि शब्दों के साथ आएँगे।

किम् = क्या (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

(द्वितीया विभक्ति के बाद शेष पुंल्लिंग के समान हैं।)

अस्मद् = मैं, हम (दोनों लिंगों में समान)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम् (मा)	आवाम् (नौ)	अस्मान् (नः)
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम् (मे)	आवाभ्याम् (नौ)	अस्मभ्यम् (नः)
पंचमी	मत्	आवाभ्याम् (नौ)	अस्मत्
षष्ठी	मम (मे)	आवयोः (नौ)	अस्माकम् (नः)
सप्तमी	मयि	आवयोः (नौ)	अस्मासु

युष्मद् = तू, तुम (दोनों लिंगों में समान)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम् (त्वा)	युवाम्	युष्मान् (वः)
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः (नः)
चतुर्थी	तुभ्यम् (ते)	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम् (वः)
पंचमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव (ते)	युवयोः	युष्माकम् (वः)
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

यत् = जो (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पंचमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

यत् = जो (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पंचमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

यत् = जो (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	यत्	ये	यानि

(शेष रूप पुंल्लिग के समान होंगे।)

ध्यातव्यम्

- प्राय: लिंग तथा अंतिम वर्ण समान होने पर मूल शब्द को बदलकर दूसरा शब्द उन्हीं मात्राओं के साथ रखने से किसी भी शब्द के रूप बनाए जा सकते हैं।
- पहले विभक्ति के अनुसार रूप याद करें। फिर वचनानुसार अंतर को समझ लीजिए।
- वर्तनी का विशेष रूप से ध्यान रखें। यदि मात्राओं व वर्णों का उच्चारण ठीक होगा तो वर्तनी भी शुद्ध होगी।

स्मरणीया: बिन्दव:

1. संस्कृत भाषा में तीन लिंग होते हैं।
2. नपुंसकलिंग अकारान्त के रूप तृतीया से सप्तमी विभक्ति तक प्राय: अकारान्त पुंल्लिग के समान ही चलते हैं। केवल प्रथमा, द्वितीया तथा संबोधन के रूप अलग होंगे।
3. सर्वनाम शब्दों के संबोधन नहीं हो सकते।
4. 'ऋ' 'र्' तथा 'ष' के बाद यदि न आ जाए तो वह 'ण' हो जाता है। यह परिवर्तन 'न्' के साथ किसी स्वर के होने पर ही होता है।
5. तत्, एतत्, यत्, किम् सर्वनाम शब्दों के रूप तीनों लिंगों में चलते हैं।
6. युष्मद् तथा अस्मद् के रूप दोनों लिंगों में समान होते हैं।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. मञ्जूषातः रूपाणि चित्वा शब्दरूपपूर्तिम् कुरुत।

(मंजूषा से रूप चुनकर शब्द रूपों को पूर्ण कीजिए।)

1. नर = मनुष्य (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नरः	1.....	नराः
द्वितीया	नरम्	नरौ	2.....
तृतीया	3.....	नराभ्याम्	नरैः
चतुर्थी	नराय	4.....	5.....
पंचमी	नरात्	6.....	नरेभ्यः
षष्ठी	नरस्य	7.....	8.....
सप्तमी	नरे	9.....	नरेषु
सम्बोधन	हे नर!	10.....	हे नराः!

हे नरौ, नरयोः, नराणाम्, नरयोः, नराभ्याम्, नरौ, नरेभ्यः, नराभ्याम्, नरेण, नरान्

2. कच्छप = कछुआ (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	1.....	कच्छपौ	कच्छपाः
द्वितीया	कच्छपम्	2.....	कच्छपान्
तृतीया	कच्छपेन	3.....	कच्छपैः
चतुर्थी	4.....	कच्छपाभ्याम्	कच्छपेभ्यः
पंचमी	कच्छपात्	कच्छपाभ्याम्	5.....
षष्ठी	6.....	7.....	कच्छपानाम्
सप्तमी	8.....	कच्छपयोः	9.....
संबोधन	हे कच्छप!	10.....	हे कच्छपाः!

कच्छपौ, हे कच्छपौ!, कच्छपयोः, कच्छपाय, कच्छपेषु, कच्छपः, कच्छपाभ्याम्:, कच्छपस्य, कच्छपेभ्यः, कच्छपे

3. बाल = बालक (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालकः	बालकौ	1.....
द्वितीया	2.....	बालकौ	बालकान्
तृतीया	3.....	बालकाभ्याम्	बालकैः
चतुर्थी	4.....	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
पंचमी	5.....	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
षष्ठी	6.....	बालकयोः	7.....
सप्तमी	8.....	बालकयोः	9.....
सम्बोधन	10.....	हे बालकौ !	हे बालकाः !

हे बालक !, बालके, बालकेषु, बालकानाम्, बालकाः, बालकस्य, बालकम्, बालकाय, बालकेन, बालकात्

4. सागर = समुद्र (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सागरः	1.....	सागराः
द्वितीया	2.....	सागरौ	सागरान्
तृतीया	सागरेण	3.....	सागरैः
चतुर्थी	सागराय	सागराभ्याम्	4.....
पंचमी	सागरात्	सागराभ्याम्	5.....
षष्ठी	सागरस्य	6.....	सागराणाम्
सप्तमी	7.....	सागरयोः	8.....
सम्बोधन	हे सागर !	9.....	10.....

सागरस्य, सागरौ, हे सागराः !, सागरम्, सागरेभ्यः,
सागराभ्याम्, सागरेषु, सागरेभ्यः, हे सागरौ !, सागरयोः, सागरे

5. छात्र = विद्यार्थी (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	छात्रः	1.....	2.....
द्वितीया	3.....	छात्रौ	4.....
तृतीया	छात्रेण	छात्राभ्याम्	5.....
चतुर्थी	छात्राय	छात्राभ्याम्	6.....
पंचमी	7.....	छात्राभ्याम्	छात्रेभ्यः
षष्ठी	8.....	छात्रयोः	9.....
सप्तमी	छात्रे	छात्रयोः	10.....
सम्बोधन	हे छात्र!	हे छात्रौ!	हे छात्राः!

छात्रम्, छात्रेभ्यः, छात्रेषु, छात्रौ, छात्रस्य, छात्रान्, छात्रैः, छात्रात्, छात्राः, छात्राणाम्

II. मञ्जूषातः रूपाणि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(मंजूषा से रूपों को चुनकर रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।)

1. पत्र = पत्ता (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	1.....	पत्रे	पत्राणि
द्वितीया	2.....	3.....	4.....
तृतीया	पत्रेण	पत्राभ्याम्	पत्रैः
चतुर्थी	5.....	पत्राभ्याम्	पत्रेभ्यः
पंचमी	6.....	7.....	पत्रेभ्यः
षष्ठी	8.....	पत्रयोः	पत्राणाम्
सप्तमी	9.....	पत्रयोः	10.....
सम्बोधन	हे पत्र!	हे पत्रे!	हे पत्राणि!

पत्रम्, पत्रे, पत्राणाम्, पत्राणि, पत्राभ्याम्, पत्रस्य, पत्रेषु, पत्रे, पत्रम्, पत्राय, पत्रात्

4. वस्त्र = कपड़ा (नपुंसक

	एकवचन	द्विवचन	
प्रथमा	1..........	वस्त्रे	
द्वितीया	वस्त्रम्	3..........	4..........
तृतीया	5..........	वस्त्राभ्याम्	6..........
चतुर्थी	वस्त्राय	वस्त्राभ्याम्	7..........
पंचमी	8..........	वस्त्राभ्याम्	9..........
षष्ठी	वस्त्रस्य	वस्त्रयो:	वस्त्राणाम्
सप्तमी	वस्त्रे	वस्त्रयो:	10..........
सम्बोधन	हे वस्त्र!	हे वस्त्रे!	हे वस्त्राणि!

वस्त्रे, वस्त्रेषु, वस्त्राणि, वस्त्रेभ्य:, वस्त्राणि, वस्त्रात्, वस्त्रेभ्य:, वस्त्रम्, वस्त्रेण, वस्त्रै:

5. जल = पानी (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	जलम्	जले	1..........
द्वितीया	2..........	जले	जलानि
तृतीया	जलेन	3..........	जलै:
चतुर्थी	जलाय	जलाभ्याम्	4..........
पंचमी	5..........	जलाभ्याम्	जलेभ्य:
षष्ठी	जलस्य	6..........	7..........
सप्तमी	8..........	जलयो:	9..........
सम्बोधन	10..........	हे जले!	हे जलानि!

जलाभ्याम्, हे जल!, जलानि, जलम्, जलेषु, जलेभ्य:, जलयो:, जलात्, जलानाम्, जले

III. ...क्तस्थानानि पूरयत।

(म... ...क्त स्थान पूर्ण कीजिए।)

...1. बाला = लड़की

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	1.....	बाले	बाला:
द्वितीया	बालाम्	बाले	बाला:
तृतीया	बालया	बालाभ्याम्	2.....
चतुर्थी	बालायै	3.....	बालाभ्य:
पंचमी	4.....	5.....	6.....
षष्ठी	7.....	बालयो:	8.....
सप्तमी	9.....	बालयो:	10.....
सम्बोधन	हे बाले!	हे बाले!	हे बाला!

बालाभ्य:, बालाभ्याम्, बालाया:, बालानाम्, बालाभि:, बालासु, बाला, बालाया:, बालाभ्याम्, बालायाम्

2. कथा = कहानी

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	1.....	कथे	2.....
द्वितीया	कथाम्	3.....	कथा:
तृतीया	4.....	5.....	6.....
चतुर्थी	कथायै	7.....	कथाभ्य:
पंचमी	8.....	कथाभ्याम्	कथाभ्य:
षष्ठी	कथाया:	9.....	कथानाम्
सप्तमी	कथायाम्	10.....	कथासु
सम्बोधन	हे कथे!	हे कथे!	हे कथा:!

कथाभि:, कथयो:, कथा, कथया, कथे, कथयो:, कथा:, कथाभ्याम्, कथाभ्याम्, कथाया:

3. पाठशाला = विद्यालय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पाठशाला	पाठशाले	1.....
द्वितीया	पाठशालाम्	2.....	पाठशाला:
तृतीया	3.....	पाठशालाभ्याम्	पाठशालाभि:
चतुर्थी	पाठशालायै	4.....	पाठशालाभ्य:
पंचमी	5.....	पाठशालाभ्याम्	6.....
षष्ठी	पाठशालाया:	7.....	8.....
सप्तमी	9.....	पाठशालयो:	10.....
सम्बोधन	हे पाठशाले!	हे पाठशाले!	हे पाठशाला:!

पाठशाला:, पाठशालायाम्, पाठशालया, पाठशालाभ्याम्, पाठशालासु, पाठशालयो:, पाठशालानाम्, पाठशालाभ्य:, पाठशालाया:, पाठशाले

4. कक्षा = श्रेणी, कमरा

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कक्षा	कक्षे	1.....
द्वितीया	कक्षाम्	कक्षे	2.....
तृतीया	3.....	4.....	कक्षाभि:
चतुर्थी	5.....	कक्षाभ्याम्	6.....
पंचमी	कक्षाया:	कक्षाभ्याम्	7.....
षष्ठी	8.....	कक्षयो:	9.....
सप्तमी	कक्षायाम्	10.....	कक्षासु
सम्बोधन	हे कक्षे!	हे कक्षे!	हे कक्षा:!

कक्षाया:, कक्षाभ्याम्, कक्षा:, कक्षयो:, कक्षाभ्य:, कक्षाणाम्, कक्षा:, कक्षाभ्य: कक्षायै, कक्षया

IV. मञ्जूषातः उचितं सर्वनाम-शब्दरूपं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(मंजूषा से उचित सर्वनाम शब्द रूप चुनकर रिक्त स्थानों को भरिए।)

1. तत् = वह (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	1.....	ते
द्वितीया	2.....	तौ	3.....
तृतीया	तेन	4.....	5.....
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	6.....
पंचमी	7.....	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	8.....	9.....
सप्तमी	10.....	तयोः	तेषु

तेषाम्, तान्, तौ, ताभ्याम्, तम्, तैः, तस्मात्, तेभ्यः, तस्मिन्, तयोः

2. तत् = वह (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	1.....	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	2.....
तृतीया	3.....	4.....	5.....
चतुर्थी	6.....	ताभ्याम्	ताभ्यः
पंचमी	7.....	ताभ्याम्	8.....
षष्ठी	9.....	तयोः	तासाम्
सप्तमी	10.....	तयोः	तासु

ताभ्याम्, तया, ते, ताभिः, ताः, ताभ्यः, तस्याः, तस्याः, तस्याम्, तस्यै

3. यत् = जो (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यः	1.....	ये
द्वितीया	2.....	यौ	यान्
तृतीया	येन	3.....	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	4.....
पंचमी	5.....	6.....	येभ्यः
षष्ठी	7.....	8.....	येषाम्
सप्तमी	9.....	10.....	येषु

यम्, येभ्यः, ययोः, यस्मात्, ययोः, याभ्याम्, यस्मिन्, यौ, यस्य, याभ्याम्

4. यत् = जो (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	या	ये	1.....
द्वितीया	2.....	ये	3.....
तृतीया	4.....	याभ्याम्	5.....
चतुर्थी	6.....	याभ्याम्	7.....
पंचमी	8.....	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	9.....
सप्तमी	10.....	ययोः	यासु

यस्याम्, यासाम्, याः, याभ्यः, यस्याः, याम्, याः, यया, याभिः, यस्यै

5. किम् = क्या (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	1.....	के
द्वितीया	2.....	कौ	3.....
तृतीया	केन	4.....	5.....
चतुर्थी	कस्मै	6.....	7.....
पंचमी	8.....	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	9.....	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	10.....

केषु, केभ्यः, कैः, कम्, कौ, काभ्याम्, कस्मात्, कयोः, काभ्याम्, कान्

6. किम् = क्या (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	1.....	के	काः
द्वितीया	काम्	2.....	काः
तृतीया	3.....	काभ्याम्	4.....
चतुर्थी	कस्यै	5.....	काभ्यः
पंचमी	6.....	काभ्याम्	7.....
षष्ठी	कस्याः	8.....	9.....
सप्तमी	10.....	कयोः	कासु

कस्याम्, केभ्यः, काभ्याम्, काभिः, कया, कस्याः, के, कयोः, कासाम्, का

3 धातुरूप-प्रकरणम्

धातु– जिन शब्दों से किसी कार्य के करने या होने का बोध हो उसे **क्रिया** कहते हैं; जैसे–खाना, पीना, हँसना, चलना, पढ़ना इत्यादि। इन क्रियाओं के मूल रूप को **धातु** कहते हैं। जिस प्रकार धातु को किसी भी आकार में ढाला जा सकता है, उसी प्रकार धातु से कोई भी शब्द बनाया जा सकता है।

संस्कृत में क्रिया को व्यक्त करने वाली इन सभी धातुओं के रूप तीनों लिंगों में एक समान चलते हैं। निम्नलिखित धातुओं के अर्थों को समझ लीजिए:

√पठ्	=	पढ़ना	√वद्	=	बोलना
√खाद्	=	खाना	√यज्	=	यज्ञ करना
√पत्	=	गिरना	√भ्रम्	=	घूमना
√दृश् (पश्य्)	=	देखना	√पच्	=	पकाना
√चल्	=	चलना	√तॄ (तर्)	=	तैरना
√गम् (गच्छ्)	=	जाना	√चर्	=	चरना, चलना
√लिख्	=	लिखना	√गर्ज्	=	गरजना
√हस्	=	हँसना	√खेल्	=	खेलना
√नृत् (नृत्य्)	=	नृत्य करना (नाचना)	√क्रीड्	=	खेलना
√धाव्	=	दौड़ना	√खन्	=	खोदना
√नम्	=	झुकना, नमस्कार करना	√क्षिप्	=	फेंकना
√रुद् (रोद्)	=	रोना	√भू (भव्)	=	होना
√दा (यच्छ्)	=	देना	√कृष् (कर्ष्)	=	खींचना
√स्था (तिष्ठ्)	=	ठहरना, बैठना	√कूज्	=	चहचहाना
√पा (पिब्)	=	पीना	√रक्ष्	=	रक्षा करना, रखना
			√अस्	=	होना

धातु में कुछ प्रत्यय जोड़कर क्रिया रूप बनाए जाते हैं। ये प्रत्यय लकार, वचन तथा पुरुष के अनुसार अलग-अलग होते हैं।

लकाराः

काल तथा अवस्था के अनुसार **दस लकार** होते हैं–**लट् लकार**, **लृट् लकार**, **लोट् लकार**, **लङ् लकार**, **विधिलिङ् लकार**, **लिट् लकार**, **लुट् लकार**, **लेट् लकार**, **लुङ् लकार** तथा **लृङ् लकार**। परंतु मुख्यतः पाँच लकारों–लट्, लृट्, लङ्, लोट् एवं विधिलिङ् का ही प्रयोग होता है। आरंभ में केवल **लट्** और **लृट्** लकारों का परिचय ही पर्याप्त है।

1. लट् लकार:

इसका प्रयोग *वर्तमान काल* के लिए किया जाता है; यथा–ता है, ती है, ते हैं, तीं हैं, ते हो, ती हो, ता हूँ, ती हूँ इत्यादि। इसमें निम्नलिखित प्रत्यय जुड़ जाते हैं :

लट् लकार:

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ति	त:	अन्ति
मध्यम पुरुष	सि	थ:	थ
उत्तम पुरुष	आमि	आव:	आम:

लट् लकार के कुछ धातु रूप इस प्रकार हैं :

√पठ् = पढ़ना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठति	पठत:	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथ:	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठाव:	पठाम:

√खाद् = खाना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खादति	खादत:	खादन्ति
मध्यम पुरुष	खादसि	खादथ:	खादथ
उत्तम पुरुष	खादामि	खादाव:	खादाम:

√पत् = गिरना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पतति	पतत:	पतन्ति
मध्यम पुरुष	पतसि	पतथ:	पतथ
उत्तम पुरुष	पतामि	पताव:	पताम:

√दृश् (पश्य्) = देखना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यति	पश्यत:	पश्यन्ति
मध्यम पुरुष	पश्यसि	पश्यथ:	पश्यथ
उत्तम पुरुष	पश्यामि	पश्याव:	पश्याम:

√चल् = चलना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चलति	चलतः	चलन्ति
मध्यम पुरुष	चलसि	चलथः	चलथ
उत्तम पुरुष	चलामि	चलावः	चलामः

√गम् (गच्छ्) = जाना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

√लिख् = लिखना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लिखति	लिखतः	लिखन्ति
मध्यम पुरुष	लिखसि	लिखथः	लिखथ
उत्तम पुरुष	लिखामि	लिखावः	लिखामः

√हस् = हँसना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हसति	हसतः	हसन्ति
मध्यम पुरुष	हससि	हसथः	हसथ
उत्तम पुरुष	हसामि	हसावः	हसामः

√नृत् (नृत्य्) = नाचना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति
मध्यम पुरुष	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
उत्तम पुरुष	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः

√धाव् = दौड़ना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	धावति	धावतः	धावन्ति
मध्यम पुरुष	धावसि	धावथः	धावथ
उत्तम पुरुष	धावामि	धावावः	धावामः

√नम् = नमस्कार करना/झुकना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नमति	नमतः	नमन्ति
मध्यम पुरुष	नमसि	नमथः	नमथ
उत्तम पुरुष	नमामि	नमावः	नमामः

√रुद् (रोद्) = रोना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रोदिति	रुदितः	रुदन्ति
मध्यम पुरुष	रोदिषि	रुदिथः	रुदिथ
उत्तम पुरुष	रोदिमि	रुदिवः	रुदिमः

√दा (यच्छ्) = देना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यच्छति	यच्छतः	यच्छन्ति
मध्यम पुरुष	यच्छसि	यच्छथः	यच्छथ
उत्तम पुरुष	यच्छामि	यच्छावः	यच्छामः

√स्था (तिष्ठ्) = बैठना, ठहरना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
मध्यम पुरुष	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
उत्तम पुरुष	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः

√पा (पिब्) = पीना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
मध्यम पुरुष	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तम पुरुष	पिबामि	पिबावः	पिबामः

√वद् = बोलना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वदति	वदतः	वदन्ति
मध्यम पुरुष	वदसि	वदथः	वदथ
उत्तम पुरुष	वदामि	वदावः	वदामः

√यज् = यज्ञ करना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यजति	यजतः	यजन्ति
मध्यम पुरुष	यजसि	यजथः	यजथ
उत्तम पुरुष	यजामि	यजावः	यजामः

√भ्रम् = घूमना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भ्रमति	भ्रमतः	भ्रमन्ति
मध्यम पुरुष	भ्रमसि	भ्रमथः	भ्रमथ
उत्तम पुरुष	भ्रमामि	भ्रमावः	भ्रमामः

√पच् = पकाना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचति	पचतः	पचन्ति
मध्यम पुरुष	पचसि	पचथः	पचथ
उत्तम पुरुष	पचामि	पचावः	पचामः

√तॄ (तर्) = तैरना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तरति	तरतः	तरन्ति
मध्यम पुरुष	तरसि	तरथः	तरथ
उत्तम पुरुष	तरामि	तरावः	तरामः

√चर् = चरना, चलना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चरति	चरतः	चरन्ति
मध्यम पुरुष	चरसि	चरथः	चरथ
उत्तम पुरुष	चरामि	चरावः	चरामः

√गर्ज् = गरजना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गर्जति	गर्जतः	गर्जन्ति
मध्यम पुरुष	गर्जसि	गर्जथः	गर्जथ
उत्तम पुरुष	गर्जामि	गर्जावः	गर्जामः

√खेल् = खेलना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खेलति	खेलतः	खेलन्ति
मध्यम पुरुष	खेलसि	खेलथः	खेलथ
उत्तम पुरुष	खेलामि	खेलावः	खेलामः

√क्रीड् = खेलना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रीडति	क्रीडतः	क्रीडन्ति
मध्यम पुरुष	क्रीडसि	क्रीडथः	क्रीडथ
उत्तम पुरुष	क्रीडामि	क्रीडावः	क्रीडामः

√खन् = खोदना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खनति	खनतः	खनन्ति
मध्यम पुरुष	खनसि	खनथः	खनथ
उत्तम पुरुष	खनामि	खनावः	खनामः

√क्षिप् = फेंकना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्षिपति	क्षिपतः	क्षिपन्ति
मध्यम पुरुष	क्षिपसि	क्षिपथः	क्षिपथ
उत्तम पुरुष	क्षिपामि	क्षिपावः	क्षिपामः

√भू (भव्) = होना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः

√कृष् (कर्ष्) = खींचना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कर्षति	कर्षतः	कर्षन्ति
मध्यम पुरुष	कर्षसि	कर्षथः	कर्षथ
उत्तम पुरुष	कर्षामि	कर्षावः	कर्षामः

√कूज् = चहचहाना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कूजति	कूजत:	कूजन्ति
मध्यम पुरुष	कूजसि	कूजथ:	कूजथ
उत्तम पुरुष	कूजामि	कूजाव:	कूजाम:

√रक्ष् = रक्षा करना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रक्षति	रक्षत:	रक्षन्ति
मध्यम पुरुष	रक्षसि	रक्षथ:	रक्षथ
उत्तम पुरुष	रक्षामि	रक्षाव:	रक्षाम:

2. लृट् लकार:

इसका प्रयोग भविष्यत् काल के लिए किया जाता है; यथा–गा, गे, गी। लृट् लकार के कुछ रूप इस प्रकार हैं :

√पठ् = पढ़ना (लृट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यत:	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथ:	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्याव:	पठिष्याम:

√खाद् = खाना (लृट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खादिष्यति	खादिष्यत:	खादिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	खादिष्यसि	खादिष्यथ:	खादिष्यथ
उत्तम पुरुष	खादिष्यामि	खादिष्याव:	खादिष्याम:

√पत् = गिरना (लृट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पतिष्यति	पतिष्यत:	पतिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पतिष्यसि	पतिष्यथ:	पतिष्यथ
उत्तम पुरुष	पतिष्यामि	पतिष्याव:	पतिष्याम:

√दृश् (पश्य्) = देखना (लृट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यत:	द्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथ:	द्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्याव:	द्रक्ष्याम:

√चल् = चलना (लृट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चलिष्यति	चलिष्यत:	चलिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चलिष्यसि	चलिष्यथ:	चलिष्यथ
उत्तम पुरुष	चलिष्यामि	चलिष्याव:	चलिष्याम:

इसी प्रकार निम्नलिखित धातुओं के **लृट् लकार** के प्रथम पुरुष के रूप देखकर आप आगे रूप स्वयं चला सकते हैं :

धातु		अर्थ		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
√गम्	=	जाना	=	गमिष्यति	गमिष्यत:	गमिष्यन्ति
√लिख्	=	लिखना	=	लेखिष्यति	लेखिष्यत:	लेखिष्यन्ति
√हस्	=	हँसना	=	हसिष्यति	हसिष्यत:	हसिष्यन्ति
√नृत्	=	नाचना	=	नर्तिष्यति	नर्तिष्यत:	नर्तिष्यन्ति
√धाव्	=	दौड़ना	=	धाविष्यति	धाविष्यत:	धविष्यथ
√नम्	=	झुकना/नमस्कार करना	=	नंस्यति	नंस्यत:	नंस्यन्ति
√रुद्	=	रोना	=	रोदिष्यति	रोदिष्यत:	रोदिष्यन्ति
√दा (यच्छ्)	=	देना	=	दास्यति	दास्यत:	दास्यन्ति
√स्था (तिष्ठ्)	=	बैठना	=	स्थास्यति	स्थास्यत:	स्थास्यन्ति
√पा (पिब्)	=	पीना	=	पास्यति	पास्यत:	पास्यन्ति
√वद्	=	बोलना	=	वदिष्यति	वदिष्यत:	वदिष्यन्ति
√यज्	=	यज्ञ करना	=	यक्ष्यति	यक्ष्यत:	यक्ष्यन्ति
√भ्रम्	=	घूमना	=	भ्रमिष्यति	भ्रमिष्यत:	भ्रमिष्यन्ति
√पच्	=	पकाना	=	पक्ष्यति	पक्ष्यत:	पक्ष्यन्ति
√तृ	=	तैरना	=	तरिष्यति	तरिष्यत:	तरिष्यन्ति
√चर्	=	चरना	=	चरिष्यति	चरिष्यत:	चरिष्यन्ति
√गर्ज्	=	गरजना	=	गर्जिष्यति	गर्जिष्यत:	गर्जिष्यन्ति
√खेल्	=	खेलना	=	खेलिष्यति	खेलिष्यत:	खेलिष्यन्ति
√क्रीड्	=	खेलना	=	क्रीडिष्यति	क्रीडिष्यत:	क्रीडिष्यन्ति

√खन्	=	खोदना	=	खनिष्यति	खनिष्यतः	खनिष्यन्ति
√क्षिप्	=	फेंकना	=	क्षेप्स्यति	क्षेप्स्यतः	क्षेप्स्यन्ति
√भू	=	होना	=	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
√कृष्	=	खींचना	=	कर्क्ष्यति	कर्क्ष्यतः	कर्क्ष्यन्ति
√कूज्	=	चहचहाना	=	कूजिष्यति	कूजिष्यतः	कूजिष्यन्ति
√रक्ष्	=	रक्षा करना	=	रक्षिष्यति	रक्षिष्यतः	रक्षिष्यन्ति
√अस्	=	होना	=	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति

ध्यातव्यम्

- एक धातु के अनेक अर्थ हो सकते हैं; यथा–√नम् इत्यादि।
- कुछ धातुओं में प्रत्यय के साथ जुड़ने पर 'इ' का आगम हो जाता है; जैसे–चलिष्यति
- लृट् लकार में मूल धातु का रूप प्रायः लट् लकार से अलग हो जाता है।
- एक ही अर्थ के लिए भी अनेक धातु हो सकते हैं; यथा–खेलना के लिए √क्रीड्, √खेल् इत्यादि।
- द्विवचन के तीनों पद लट् व लृट् लकार में विसर्गयुक्त होते हैं।
- एकवचन के तीनों पुरुषों के रूपों में ह्रस्व स्वर 'इ' की मात्रा लगती है।
- ध्यान रखें कि शुद्ध लिखने के लिए शुद्ध उच्चारण अत्यावश्यक है।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. क्रिया का मूल रूप ही धातु कहलाता है।
2. संस्कृत में तीन वचन होते हैं–एकवचन, द्विवचन और बहुवचन।
3. मूल धातु में प्रत्यय जुड़ने पर क्रिया रूप बनते हैं।
4. लकार दस होते हैं, पर प्रमुख पाँच लकारों का ही प्रयोग होता है।
5. लट् लकार का प्रयोग वर्तमान काल के लिए किया जाता है।
6. लृट् लकार का प्रयोग भविष्यत् काल के लिए किया जाता है।
7. कुछ धातुओं के लट् लकार मूल धातु के अनुसार चलते हैं, लेकिन कुछ धातुओं के लट् लकार में परिवर्तन हो जाता है।
   उदाहरणार्थ–√गम् = गच्छति, √दृश् = पश्यति इन्हें अलग से स्मरण कर लेना चाहिए।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. **कोष्ठकात् उचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।**

(कोष्ठक से उचित पदं चुनकर रिक्त स्थानों को पूरा कीजिए।)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
1.	रोदिति	रुदितः	.....	(रोदन्ति/रुदन्ति)
	रोदिषि	.....	रुदिथ	(रोदिथः/रुदिथः)
	.....	रुदिवः	रुदिमः	(रोदिमि/रुदिमि)
2.	धावति	.....	धावन्ति	(धावतः/धावसः)
	.....	धावथः	धावथ	(धावासि/धावसि)
	धावामि	धावावः	.....	(धावमः/धावामः)
3.	पठति	पठतः	.....	(पठन्ती/पठन्ति)
	पठसि	.....	पठथ	(पठथ/पठथः)
	.....	पठावः	पठामः	(पठामी/पठामि)
4.	.....	गच्छतः	गच्छन्ति	(गच्छति/गच्छाति)
	गच्छसि	गच्छथः	.....	(गच्छथ/गमथः)
	गच्छामि	.....	गच्छामः	(गच्छवः/गच्छावः)
5.	.....	यच्छतः	यच्छन्ति	(यच्छती/यच्छति)
	यच्छसि	.....	यच्छथ	(यच्छथः/यच्छथ)
	यच्छामि	.....	यच्छामः	(यच्छावः/यछावः)
6.	भ्रमति	भ्रमतः	.....	(भ्रमन्ति/भ्रमन्ती)
	भ्रमसि	.....	भ्रमथ	(भ्रमथः/भम्रथः)
	.....	भ्रमावः	भ्रमामः	(भ्रमामि/भ्रमामी)
7.	.....	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति	(तिष्ठती/तिष्ठति)

	तिष्ठसि	.....	तिष्ठथ	(तिष्ठथः/तिष्ठाथः)
	तिष्ठामि	तिष्ठावः	.....	(तिष्ठमः/तिष्ठामः)
8.	.....	पिबतः	पिबन्ति	(पिबति/पिबाति)
	पिबसि	.....	पिबथ	(पिबाथः/पिबथः)
	पिबामि	.....	पिबामः	(पिबावः/पिबामः)
9.	पचति	.....	पचन्ति	(पकतः/पचतः)
	.....	पचथः	पचथ	(पचासि/पचसि)
	पचामि	पचावः	.....	(पचमि/पचामः)
10.	.....	यजतः	यजन्ति	(यजति/यजाति)
	यजसि	यजथः	.....	(यजथ/यजथः)
	यजामि	.....	यजामः	(यजवः/यजावः)
11.	तरति	.....	तरन्ति	(तरतः/तरथः)
	तरसि	.....	तरथ	(तरथः/तरसः)
	तरामि	.....	तरामः	(तरावि/तरावः)
12.	.....	रक्षतः	रक्षन्ति	(रक्षति/रक्षाति)
	.....	रक्षथः	रक्षथ	(रक्षसि/रक्षामि)
	.....	रक्षावः	रक्षामः	(रक्षमि/रक्षामि)
13.	क्रीडति	क्रीडतः	.....	(क्रीडन्ती/क्रीडन्ति)
	क्रीडसि	क्रीडथः	.....	(क्रीडाथः/क्रीडथ)
	.....	क्रीडावः	क्रीडामः	(क्रीडमि/क्रीडामि)
14.	खादति	खादतः	.....	(खादन्ती/खादन्ति)
	.....	खादथः	खादथ	(खादासि/खादसि)
	.....	खादावः	खादामः	(खादामि/खादमि)
15.	गर्जति	.....	गर्जन्ति	(गजतिः/गर्जतः)
	.....	गर्जथः	गर्जथ	(गजसि/गर्जसि)
	गर्जामि	गर्जावः	.....	(गर्जमः/गर्जामः)

II. अधोलिखितानि पदानि शुद्धं कुरुत।

(नीचे लिखे शब्दों को शुद्ध कीजिए।)

1. गच्छिष्यति ..... 2. लिखिष्यामि .....
3. नमिष्यसि ..... 4. नृतिष्यति .....
5. तिष्ठिष्यामि ..... 6. दासिष्यति .....
7. पिबिष्यतः ..... 8. वदस्यति .....
9. तृष्यति ..... 10. गर्जस्यति .....
11. हसष्यति ..... 12. कृष्यथः .....
13. भूविष्यति ..... 14. कूजस्यावः .....
15. पश्यिष्यामः ..... 16. पिविष्यति .....

III. मञ्जूषातः उचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(मंजूषा से उचित पद छाँटकर रिक्त स्थानों को पूरा कीजिए।)

(क)	1.	नंस्यति	.....	नंस्यन्ति
	2.	.....	नंस्यथः	नंस्यथ
	3.	नंस्यामि	नंस्यावः	.....
(ख)	1.	भविष्यति	भविष्यतः	.....
	2.	भविष्यसि	.....	भविष्यथ
	3.	भविष्यामि	.....	भविष्यामः
(ग)	1.	हसिष्यति	हसिष्यतः	.....
	2.	.....	हसिष्यथः	.....
	3.	हसिष्यामि	.....	हसिष्यामः

हसिष्यावः, हसिष्यथ, हसिष्यन्ति, हसिष्यसि, भविष्यथः,
भविष्यावः,भविष्यन्ति, नंस्यसि, नंस्यतः, नंस्यामः

4 कारकाः विभक्तयः च

1. कारकाः

वाक्य में प्रयुक्त विभिन्न शब्दों के जिस रूप से क्रिया के साथ उसका संबंध जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं। इन कारकों के अर्थ को व्यक्त करने वाले चिह्न कारक चिह्न कहलाते हैं। कारक की विभक्तियाँ इन्हीं चिह्नों के स्थान पर लगाई जाती हैं।

2. विभक्तयः

कारक आठ होते हैं और विभक्तियाँ सात होती हैं:

कारक	चिह्न	विभक्ति
1. कर्ता	ने (–)	प्रथमा
2. कर्म	को (–)	द्वितीया
3. करण	से (के द्वारा)	तृतीया
4. संप्रदान	के लिए	चतुर्थी
5. अपादान	से अलग होने पर	पंचमी
6. संबंध	का, के, की, रा, रे, री	षष्ठी
7. अधिकरण	में, पर	सप्तमी
8. संबोधन	हे, भो, अरे	——

प्रत्यय शब्दों तथा धातुओं के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता को उत्पन्न करने तथा अर्थ परिवर्तन करने का कार्य करते हैं। विभिन्न कारकों को व्यक्त करने के लिए मूल शब्दों में जो प्रत्यय लगाए जाते हैं, उन्हें विभक्ति कहते हैं। शब्दों में जब तक प्रत्यय नहीं लगते तब तक वे शब्द कहलाते हैं तथा प्रत्यय जुड़ने पर (रूप चलने पर) वे **पद** कहलाते हैं। इस तरह **अज** एक **शब्द** हुआ तथा **अज, अजस्य, अजम्** ये सब **पद** हुए। संस्कृत भाषा में बिना पद बनाए किसी भी शब्द या धातु का मूल रूप में प्रयोग नहीं हो सकता इसीलिए उनके रूप चलाए जाते हैं।

'एक बकरे ने' का संस्कृत अनुवाद करने लिए कारक चिह्नों का ध्यान करके हम प्रथमा विभक्ति लगाएँगे तथा वचन एकवचन रखेंगे तो पद बनेगा = अजः। इसी तरह यदि **अजस्य** पद का अर्थ ज्ञात करना हो तो हम कारक की सहायता से इसका चिह्न देखेंगे तथा विभक्ति और वचन भी देखेंगे। इसका कारक **संबंध,** चिह्न **का,** विभक्ति **षष्ठी** तथा वचन **एक** है। इस तरह पद का परिचय प्राप्त कर लेने पर हमें अर्थ का ज्ञान हो जाएगा = 'एक बकरे का'।

अब हम कारकों के साथ प्रयुक्त विभक्तियों को विस्तार से देखते हैं–

1. कर्ता कारक–प्रथमा विभक्ति

विभक्ति चिह्न–ने, (.....)

क्रिया किसने की? इसका उत्तर कर्ता होता है। कर्ता में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है–

(एकवचन)

रामः पठति।	(राम पढ़ता है।)
कः पठति?	(कौन पढ़ता है?)
लता पठति।	(लता पढ़ती है।)
मित्रम् पठति।	(मित्र पढ़ता है।)

(द्विवचन)

नरौ गच्छतः	(दो मनुष्य जाते हैं।)
यौ गच्छतः।	(जो दो जाते हैं।)
कन्ये गच्छतः।	(दो लड़कियाँ जाती हैं।)
मित्रे गच्छतः।	(दो मित्र जाते हैं।)

(बहुवचन)

बालकाः नमन्ति।	(अनेक बालक नमस्कार करते हैं।)
के नमन्ति?	(कौन सब नमस्कार करते हैं?)
कन्याः नमन्ति।	(अनेक कन्याएँ नमस्कार करती हैं।)
मित्राणि नमन्ति।	(अनेक मित्र नमस्कार करते हैं।)

2. कर्म कारक–द्वितीया विभक्ति

विभक्ति चिह्न–को

किस काम को किया गया? उसका उत्तर पद कर्म होता है। कर्म में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है–

एकवचन –	छात्रः	पुस्तकम्	पठति।	(छात्र पुस्तक को पढ़ता है।)
द्विवचन –	सा	देवौ	नमति।	(वह दो देवों को नमस्कार करती है।)
बहुवचन –	छात्रा	अध्यापकान्	प्रणमति।	(छात्रा अध्यापकों को नमस्कार करती है।)

3. करण कारक–तृतीया विभक्ति

विभक्ति चिह्न–से, के द्वारा

किस साधन के द्वारा कार्य किया जा रहा है? इसके उत्तर पद करण कारक में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है–

एकवचन –	छात्रः	कलमेन	लिखति।	(छात्र कलम से लिखता है।)
द्विवचन –	नराः	नेत्राभ्याम्	पश्यन्ति।	(लोग दो आँखों से देखते हैं।)
बहुवचन –	गजः	पादैः	चलति।	(हाथी पैरों से चलता है।)

4. संप्रदान कारक–चतुर्थी विभक्ति

विभक्ति चिह्न–के लिए

किसके लिए/किसको इस प्रश्न का उत्तर पद संप्रदान कारक होता है। संप्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है–

एकवचन – वृक्षा: परोपकाराय भवन्ति। (पेड़ परोपकार के लिए होते हैं।)

द्विवचन – शिक्षक: छात्राभ्याम् पारितोषिकम् यच्छति। (शिक्षक दो छात्रों के लिए पारितोषिक देता है।)

बहुवचन – सेविका वृद्धेभ्य: फलानि आनयति। (नौकरानी बूढ़ों के लिए फल लाती है।)

5. अपादान कारक–पंचमी विभक्ति

विभक्ति चिह्न–से (अलग होने के अर्थ में)

किसी वस्तु से अलग होने का बोध कराने वाला पद अपादान कारक होता है। अपादान कारक में पंचमी विभक्ति का प्रयोग होता है–

एकवचन – भल्लुक: पर्वतात् पतति। (भालू पहाड़ से गिरता है।)

द्विवचन – वृक्षाभ्याम् पत्राणि पतन्ति। (पेड़ों से पत्ते गिरते हैं।)

बहुवचन – मेघेभ्य: वर्षा भवति। (बादलों से वर्षा होती है।)

6. संबंध कारक–षष्ठी विभक्ति

विभक्ति चिह्न–का, के, की, रा, रे, री

किसी व्यक्ति या वस्तु का दूसरे व्यक्ति या वस्तु से संबंध प्रकट करने वाला पद संबंध कारक होता है। संबंध कारक में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है–

एकवचन – सरोवरस्य जले कमलम् विकसति। (सरोवर के जल में कमल खिलता है।)

द्विवचन – लतयो: पत्राणि नवानि सन्ति। (दो लताओं के पत्ते नए हैं।)

बहुवचन – निर्झराणाम् जलं स्वच्छं भवति। (झरनों का पानी साफ होता है।)

एकवचन – किम् इदम् तव पुस्तकम् अस्ति? (क्या यह तुम्हारी पुस्तक है?)

द्विवचन – युवयो: जनक: आगच्छति। (तुम दोनों के पिता आ रहे हैं।)

बहुवचन – भारतम् अस्माकम् देश: अस्ति। (भारत हमारा देश है।)

7. अधिकरण कारक–सप्तमी विभक्ति

विभक्ति चिह्न–में, पर।

किसी वस्तु अथवा व्यक्ति का आधार अधिकरण कारक होता है। अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है–

एकवचन – वानरा: वृक्षे तिष्ठन्ति। (बंदर पेड़ पर बैठे हैं।)

द्विवचन – अस्य वृक्षस्य शाखयो: मयूरौ तिष्ठत:। (इस पेड़ की दो टहनियों पर दो मोर बैठे हैं।)

बहुवचन – वृक्षस्य शाखासु फलानि सन्ति। (पेड़ की टहनियों पर फल हैं।)

8. संबोधन कारक

विभक्ति चिह्न–हे!, भो, अरे!

किसी व्यक्ति को बुलाने के लिए संबोधन कारक का प्रयोग होता है। इसमें थोड़े-से अंतर के साथ प्रथमा विभक्ति का प्रयोग किया जाता है–

एकवचन – भो सैनिक! त्वम् देशं कथं रक्षसि? (हे सैनिक! तुम देश को कैसे बचाते हो?)

द्विवचन – हे छात्रौ! युवां लेखं लिखथ:। (हे दो छात्रो! तुम दोनों लेख लिखते हो।)

बहुवचन – अरे नरा:! यूयम् अत्र तिष्ठथ। (अरे मनुष्यो! तुम सब यहाँ ठहरते हो/बैठते हो।)

3. उपपद-विभक्तय:

कुछ विशेष पदों के योग में आने वाली विभक्तियों को उपपद विभक्तियाँ कहते हैं। ये विशेष पद प्राय: अव्यय होते हैं। इन्हें हम निम्न तालिका से समझ सकते हैं :

उपपद तालिका

क्र.सं.	उपपद	अर्थ	उपपद विभक्ति
1.	प्रति	ओर	द्वितीया
2.	धिक्	धिक्कार	द्वितीया
3.	सह/साकम्/सार्धम्	के साथ	तृतीया
4.	अलम्	मना करना/निषेध	तृतीया
		काफी है	चतुर्थी
5.	बिना	के बिना	द्वितीया, तृतीया, पंचमी
6.	नम:	नमस्कार हो	चतुर्थी

आइए, कुछ उदाहरणों से इन्हें समझें:

1. **प्रति** शब्द के साथ द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है; जैसे–

(क) स: ग्रामं प्रति गच्छाति। वह गाँव की ओर जाता है।

(ख) मातु: हृदयं शिशुं प्रति स्नेहपूर्णं भवति। माता का हृदय शिशु के प्रति स्नेहपूर्ण होता है।

2. **धिक्** शब्द के योग में द्वितीया विभक्ति होती है; जैसे–

(क) धिक् चौरान्।	चोरों को धिक्कार है।
(ख) दुर्जनान् धिक्।	दुर्जनों को धिक्कार है।
(ग) धिक् असत्यवादिनः।	झूठ बोलने वालों को धिक्कार है।

3. **सह साकम्, सार्धम्** पद के साथ हमेशा तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है; जैसे–

(क) मृगः मृगैः सह चरति।	हिरण हिरणों के साथ चरता है।
(ख) बालः पितामहेन साकम् खेलति।	बालक दादा जी के साथ खेलता है।
(ग) माता पुत्रेण सार्धम् भ्रमति।	माता पुत्र के साथ घूमती है।
(घ) सः मूर्खेण सह न उपविशति।	वह मूर्ख के साथ नहीं बैठता है।

4. **अलम्** (बस करो) के साथ तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है; जैसे–

(क) अलम् वार्त्तालापेन।	बातचीत बंद करो।
(ख) अलम् विवादेन।	लड़ाई बंद करो।
(ग) अलम् मिथ्याभाषणेन।	झूठ बोलना बंद करो।

अलम् (पर्याप्त है) के साथ चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है; जैसे–

(क) अलम् कृष्णः कंसाय।	कंस के लिए कृष्ण ही पर्याप्त है।
(ख) अलम् रामः रावणाय।	रावण के लिए राम ही पर्याप्त है।
(ग) सतत् दुग्धं बालाय अलम्।	बच्चे के लिए इतना दूध पर्याप्त है।

5. **'नमः'** पद के साथ चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

(क) देवाय नमः।	देवता को नमस्कार।
(ख) अम्बायै नमः।	माता को नमस्कार।
(ग) श्री गणेशाय नमः।	श्री गणेश को नमस्कार है।

इसी प्रकार स्वस्ति, स्वाहा, वषट्, स्वधा, हवि इत्यादि के साथ भी चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होगा।

6. **विना** के योग में द्वितीया, तृतीया और पंचमी विभक्तियाँ लगती हैं; जैसे–

(क) ज्ञानम् विना न मुक्तिः।	ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं मिलती।
(ख) सीता रामेण विना न गच्छति।	सीता राम के बिना नहीं जाती है।
(ग) माता बालात् विना न हसति।	माता बच्चे के बिना नहीं हँसती है।
(घ) परिश्रमेण विना विद्या न भवति।	परिश्रम के बिना विद्या नहीं होती।

ध्यातव्यम्

- हिंदी से संस्कृत अथवा संस्कृत से हिंदी ज्ञान के लिए कारक की विभक्ति एवं चिह्नों को ध्यान में रखना चाहिए।
- कारकों की विभक्तियों के अनुसार तीनों वचनों में अलग-अलग प्रत्ययों का प्रयोग होता है।
- कुछ विशेष पदों के साथ कारक के नियम न लगकर उपपद विभक्ति के नियमों का प्रयोग किया जाता है।
- 'अलम्' उपपद के दो अलग-अलग अर्थों के लिए विभक्तियाँ भी अलग-अलग होती हैं।
- 'सह' की ही तरह 'साकम्' और 'सार्धम्' जैसे समानार्थी शब्दों के साथ भी तृतीया विभक्ति ही लगेगी।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. 'में' अर्थ के लिए तथा 'ऊपर' या 'पर' अर्थ के लिए अधिकरण कारक का प्रयोग होता है।
2. विभक्तियाँ केवल सात तथा कारक आठ होते हैं।
3. आठवें कारक संबोधन के लिए थोड़े-से अंतर के साथ प्रथमा विभक्ति का ही प्रयोग किया जाता है।
4. साधारण नियम कारक बताते हैं, किन्तु 'उपपद' नियमों में कारक के नियमों को प्रयुक्त न करके कुछ विशेष नियमों का प्रयोग किया जाता है।
5. विविध प्रकार के पदों के साथ अलग-अलग विभक्तियों का प्रयोग किया जाता है।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. उचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(उचित पद चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

1. सः नरः ..... पश्यति। (चित्रम्/चित्रस्य)

2. ग्रामीणाः नगरं प्रति ..... आगच्छन्ति। (ग्रामात्/ग्रामेण)

3. युवाम् ..... विद्यालयम् गच्छथः। (पठनाय/पठनम्)

4. धिक् ..... । (मम/माम्)

5. कक्षायां ..... अलम्। (कोलाहलेन/कोलाहलाय)

6. रामः ..... अलम्। (रावणाय/रावणेन)

7. हे ..... रक्ष माम्। (रामः!/राम!)

II. उचितं मेलनं कुरुत।

(उचित मिलान कीजिए।)

1. शिखासु	(क) बागों में
2. वृक्षाणाम्	(ख) टहनियों पर
3. सभायाम्	(ग) एक कुत्ते के लिए
4. उद्यानेषु	(घ) इन सब पर
5. वर्षायाम्	(ङ) चोटियों पर
6. शाखासु	(च) पेड़ों का
7. कुक्कुराय	(छ) वृक्ष से (अलग)
8. एतेषु	(ज) सूर्योदय का
9. वृक्षात्	(झ) सभा में
10. सूर्योदयस्य	(ञ) वर्षा में

III. अधोलिखितानां वाक्यानां समक्षे शुद्धम् अशुद्धं वा लिखत।

(निम्नलिखित वाक्यों के सामने शुद्ध अथवा अशुद्ध लिखिए।)

1. धिक् तान् चौरान्। .....

2. ईश्वरस्य विना न कः अपि सहायकः। .....

3. बालकाः क्रीडाक्षेत्रस्य प्रति गच्छन्ति। .....

4. अहम् प्रातः काले अम्बायै नमामि। .....

5. जनकम् नमः। .....

6. वृद्धः दण्डस्य विना न गच्छति। .....

7. इन्द्राय स्वाहा। .....

8. कक्षायाम् कोलाहलेन अलम्। .....

9. किम् एतत् भोजनम् तुभ्यम् अलम्? .....

IV. अधोलिखितानि वाक्यानि शुद्धम् कुरुत।

(नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध कीजिए)

1. बालका: कन्दुकस्य सह क्रीडन्ति। .....

2. पुष्पत्रोटनात् अलम्। .....

3. अम्बाम् नम:। .....

4. अलम् कोलाहलाय। .....

5. ज्ञाने विना न मुक्ति:। .....

6. स: छात्र: गुरु जनाय प्रति गच्छति। .....

7. श्री कृष्णम् नम:। .....

8. ज्ञानस्य बिना न मुक्ति:। .....

9. श्री रामम् नम:। .....

10. बाल: बालानाम् सह क्रीडति। .....

V. कोष्ठकप्रदत्तेषु पदेषु उचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(कोष्ठक में दिए गए पदों से उचित पद चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

1. स: ..... सह गच्छति। (मित्रस्य/मित्रेण)

2. बाल: बालै: ..... क्रीडति। (सार्धम्/अलम्)

3. अम्बा ..... साकम् भ्रमति। (जनकस्य/जनकेन)

4. ..... नम:। (शिवम्/शिवाय)

5. श्री कृष्णाय .....। (नम:/नमति)

6. धिक् .....। (चौरम्/चौराय)

7. परस्परम् विवादेन .....। (मा/अलम्)

8. कक्षायाम् कोलाहलेन .....। (मतम्/अलम्)

9. मल्ल: मल्लाय .....। (अलम्/विना)

10. श्री कृष्ण: ..... अलम्। (कंसम्/कंसाय)

5 अव्ययाः

अव्यय वे पद होते हैं जिनमें लिंग, विभक्ति तथा वचन के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता है। ये हमेशा एक जैसे रहते हैं, इनके रूप नहीं चलते। प्रयोग में आने वाले कुछ अव्यय इस प्रकार हैं :

नक्तम् = रात को (में)

दिवा = दिन में

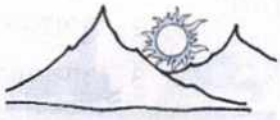

उपरि = ऊपर

नीचैः = नीचे

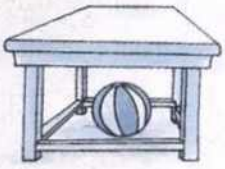

बहिः = बाहर

इतः = यहाँ से

च	= और	न	= नहीं	एव	= ही
अपि	= भी	हि	= ही	तु	= तो
तदा	= तब	कदा	= कब	यदा	= जब
अधुना	= अब	तत्र	= वहाँ	कुत्र	= कहाँ
यत्र	= जहाँ	अत्र	= यहाँ	सर्वत्र	= सब जगह
अन्यत्र	= दूसरी जगह	अधः	= नीचे	आम्	= हाँ, ज़रूर
इव	= के समान	इदानीम्	= इस समय	उच्चैः	= ऊँची आवाज़ में, ऊँचा
यथा	= जैसे	तथा	= वैसे	ऋते	= बिना, सिवाय
एवम्	= ऐसा	कदापि	= कभी	कदाचित्	= किसी समय, कभी
कथम्	= किस प्रकार	किमर्थम्	= किसलिए	खलु	= निश्चित रूप से
कुतः	= कहाँ से	इतः	= यहाँ से	ततः	= वहाँ से
मिथ्या	= झूठ	तर्हि	= तब	यावत्	= जब तक

तावत्	= तब तक	पुरा	= पहले	प्रत्यहम्	= प्रतिदिन
पुनः	= फिर	अद्य	= आज	ह्यः	= बीता हुआ कल
श्वः	= आने वाला कल	परश्वः	= आने वाला परसों	परह्यः	= बीता हुआ परसों
विना	= बिना, सिवाय	यदि	= अगर	मन्दम्-मन्दम्	= धीरे-धीरे
शनैः-शनैः	= धीरे-धीरे	मृषा	= झूठ	वृथा	= बेकार
बहुधा	= अनेक प्रकार से	सह	= के साथ, सहित	सर्वथा	= सब प्रकार से
चिरम्	= देर से	साम्प्रतम्	= अब	समीपम्	= पास में

ध्यातव्यम्

- समय संबंधी अव्ययों में प्रमुख हैं–सर्वदा, यदा, तदा, कदा, सदा इत्यादि।
- स्थान संबंधी अव्ययों में प्रमुख हैं–यत्र, तत्र, कुत्र, अत्र, सर्वत्र इत्यादि।
- स्थान से' इस अर्थ के लिए प्रमुख अव्यय हैं–कुतः, यतः, ततः, इतः इत्यादि।
- **श्वः/परश्वः** अव्ययों के साथ भविष्यत्काल (लृट् लकार) का प्रयोग किया जाता है तथा **ह्यः/परह्यः** अव्यय के साथ भूतकाल (लङ् लकार) का प्रयोग किया जाता है।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. अव्ययों के रूप नहीं चलते।
2. अव्यय हमेशा 'पद' होते हैं, 'शब्द' नहीं।
3. इनमें लिंग, विभक्ति तथा वचन के कारण कभी कोई परिवर्तन नहीं होता। इसलिए सभी के साथ हमेशा उसी रूप में प्रयोग किए जाते हैं।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. मञ्जूषायाः उचितम् अव्ययं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(मंजूषा से उचित अव्ययों को चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

(क) च, न, एव, अपि, हि, तु, तदा, कदा, यदा, अधुना।

1. सः ..... गच्छति?
2. ..... सा खादति तदा सः पिबति।

3. ..... सा पठति।

4. गजः ..... खादति न पिबति।

5. यदा बालः हसति ..... जनकः हसति।

6. लता ..... नमति वृक्षः न।

7. रमा ..... फलम् खादति।

8. रामः सीता ..... गच्छतः।

9. एषः कपोतः ..... खादति।

10. उद्यमेन ..... कार्याणि सिध्यन्ति।

(ख) तत्र, यत्र, अत्र, कुत्र, सर्वत्र, अधः, आम्, यथा, तथा, ऋते, अपि।

1. ईश्वरः ..... अस्ति।

2. ज्ञानात् ..... न मुक्तिः।

3. जलम् ..... गच्छति।

4. मीनः ..... तरति?

5. ..... धूमः ..... अग्निः।

6. ..... जनकः तथा पुत्रः।

7. यथा कर्मम् ..... फलम्।

8. ..... सा सत्यम् वदति।

9. छात्रा ..... एव पठति।

10. लता ..... फलम् खादति।

(ग) ह्यः, मिथ्या, परश्वः, मन्दम्-मन्दम्, अद्य।

1. सा ..... हसति।

2. जनकः तु कदापि ..... न वदति।

3. ..... शनिवासरः अस्ति।

4. ..... चन्द्रवासरः भविष्यति।

5. ..... शुक्रवासरः आसीत्।

II. अत्र वर्गप्रहेलिकायाम् दशअव्ययाः सन्ति तान् चित्वा लिखत।

(यहाँ वर्ग-प्रहेलिका में दस अव्यय हैं उन्हें चुनकर लिखिए।)

स[1]	था	ए[9,10]	व	म्
र्व	क्र	धः	रा	पु[3,4]
त्र	त[2]	था	क[6]	नः
श	म	वृ[5]	थ	टः
कि[7]	म	र्थ	म्	आ[8]

सङ्केताः

1. उपरितः अधः
2. वामतः दक्षिणम् प्रति
3. दक्षिणतः वामम् प्रति
4. उपरितः अधः
5. निम्नतः उपरि
6. उपरितः अधः
7. वामतः दक्षिणम् प्रति
8. दक्षिणतः वामम् प्रति
9. वामतः दक्षिणम् प्रति
10. वामतः दक्षिणम् प्रति

1. ..... 2. ..... 3. .....
4. ..... 5. ..... 6. .....
7. ..... 8. ..... 9. .....
10. .....

III. निम्नलिखितात् अनुच्छेदात् अव्ययान् चित्वा लिखत।

(निम्नलिखित अनुच्छेद से अव्ययों को चुनकर लिखिए।)

जन्तुशालायाम् बहवः खगाः पशवः च सन्ति। कच्छपः शनैः शनैः चलति। चित्रकाः इतः ततः भ्रमन्ति। यदा वर्षा भवति तदा मयूरः नृत्यति। अत्र व्याघ्राः अपि सन्ति। वानरः वृक्षात् अधः अवतरति। सिंहः गुहायाम् अस्ति, बहिः न आगच्छति।

....

....

....

....

....

6 पर्यायाः एवम् विपर्ययाः

1. पर्यायाः

पर्याय का अर्थ है समानार्थक।

पूरे संसार में एकमात्र 'संस्कृत' ही ऐसी भाषा है, जिसके विशाल शब्द भंडार में एक ही शब्द के सौ से अधिक पर्यायवाची शब्द मिल सकते हैं; यथा–'जल'। कुछ शब्दों के पर्यायवाची शब्द निम्नलिखित हैं :

1. क्रोडः = अङ्कः
2. वानरः = मर्कटः, कपिः, प्लवङ्गः, हरिः
3. नेत्रम् = नयनम्, लोचनम्
4. इन्द्रः = सुरेशः
5. विद्यार्थी = छात्रः, शिष्यः
6. अध्यापकः = शिक्षकः, आचार्यः
7. पाठशाला = विद्यालयः, पाठशाला
8. अपूर्वः = विचित्रः
9. निर्धनः = अधनः, रङ्कः
10. कोकिलः = पिकः
11. जिह्वा = रसना
12. आम्रः = रसालः
13. वस्त्रम् = चीरम्, वसनम्
14. निशा = नक्तम्, रात्रिः
15. सूर्यः = रविः, भानुः, सहस्रांशुः, सविता
16. अजः = छागः, छगलः
17. मीनः = झषः, मत्स्यः
18. कच्छपः = कूर्मः
19. पवनः = वायुः, अनिलः
20. सूदः = सूपकारः, पाचकः, औदनिकः
21. माता = अम्बा, जननी
22. जलम् = उदकम्, वारि, नीरः, सलिलम्
23. कमलम् = पंकजम्, जलजम्, नीरजम्
24. पर्वतः = नगः, गिरिः, अचलः, शैलः
25. गजः = हस्ती, द्विपः
26. हस्तः = पाणि, करः
27. नदी = सरिता, तटिनी, तरङ्गिनी
28. अश्वः = घोटकः, तुरङ्गः, हयः, घोटः
29. वृक्षः = तरुः, महीरुहः
30. नृपः = राजा, नरेशः, भूपतिः, महीपतिः
31. मेघः = वारिदः, जलदः
32. गृहम् = सदनम्, गेहम्, आलयम्, निलयम्
33. कुटजः = कुटीरम्, कुटी
34. उद्यानम् = वाटिका, उपवनम्, आरामः
35. वनम् = अरण्यम्, अटवी
36. भ्रमरः = षट्पदः
37. तडागः = सरः, सरोवरः
38. पाकशाला = महानसम्
39. पक्षी = द्विजः, खगः, खेचरः

40. मृगः = हरिणः, एणः
41. चन्द्रमा = चन्द्रः, शशाङ्कः, सोमः, शशी
42. भल्लुकः = ऋक्षः
43. न्यग्रोधः = वटः
44. मस्तकम् = ललाटम्
45. शशकः = शशः
46. रासभः = गर्दभः, खरः
47. समुद्रः = वारिधिः, जलधिः
48. द्विजः = ब्राह्मणः, विप्रः
49. जनकः = पिता
50. आलिः = आली, सखी
51. शर्करा = खाण्डवः

2. विपर्ययाः

विपरीतार्थक शब्द विपर्यय कहलाते हैं। कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं :

1. आदिः = अन्तः
2. सत्यम् = असत्यम्
3. हिंसा = अहिंसा
4. स्थिरः = अस्थिरः
5. धर्मः = अधर्मः
6. चन्द्रः = सूर्यः
7. दिवसः = निशा
8. स्थूलः = कृशः
9. नृपः = रङ्कः
10. गुरुः/विशालः = लघुः
11. एकः = अनेकः
12. उपरि = अधः
13. अन्तः = बहिः
14. अग्निः = जलम्
15. उद्यमी = अलसः
16. साधुः = दुष्टः
17. उष्णः = शीतलः
18. मधुरः = कटुः
19. बुद्धिमान् = मूर्खः/बुद्धिहीनः
20. सरसः = नीरसः

ध्यातव्यम्

- एकभी-कभी समानार्थी पदों का लिंग भिन्न-भिन्न भी हो जाता है।
- बिना पद बनाए पर्याय या विपर्यय का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- एक जैसे लगने वाले पदों के अर्थों पर विशेष रूप से ध्यान दें।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. कमलम्, पंकजम्, जलजम्, नीरजम् सभी नपुंसकलिंग के पद हैं।
2. द्विजः का अर्थ है–दो बार जन्म लेने वाला। अतएव द्विजः पक्षी का भी पर्याय है, क्योंकि पक्षी का जन्म अंडे से दुबारा होता है, साथ ही यह (द्विजः) ब्राह्मण का भी पर्याय है, क्योंकि 'उपनयन' संस्कार होने पर उसका पुनः जन्म माना जाता है।
3. वारिधिः जल को धारण करने वाला समुद्र का पर्याय है, जबकि वारिदः जल को देने वाला घन का पर्यायवाची है।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. उचितं मेलनं कुरुत।

(उचित मिलान कीजिए।)

1. मधुरः	(क) अग्निः
2. स्थूलः	(ख) दिवसः
3. गुरुः	(ग) बुद्धिहीनः
4. उपरि	(घ) शीतलः
5. अन्तः	(ङ) अलसः
6. उद्यमी	(च) बहिः
7. उष्णः	(छ) अधः
8. बुद्धिमान्	(ज) लघुः
9. निशा	(झ) कृशः
10. जलम्	(ञ) कटुः

II. अधोप्रदत्तान् चित्रान् दृष्ट्वा तेषाम् द्वौ पर्यायौ लिखत।

(नीचे दिए गए चित्रों को देखकर उनके लिए दो पर्याय लिखिए।)

1. ....

2. ....

3. ....

4. ....

5. ....

6. ....

7. ....

8. ....

9. ....

10. ....

III. अस्मिन् वर्गप्रहेलिकायां दशपदानां दशपर्यायाः सन्ति। तान् चित्वा लिखत।

(इस वर्ग-प्रहेलिका में दस पदों के दस पर्याय पद हैं। उन्हें चुनकर लिखिए।)

णः	रि	ह[2]	प्ल[3]	कू[5]
ए[1]	रः	क[7]	व	र्मः
द्वि[9]	तु[4]	र	ङ्गः	भ
जः	ट	कु[10]	प	ल्लु
झ[8]	षः	श[6]	श	कः

दशपदाः

1. मृगः
2. मृगः
3. कपिः
4. अश्वः
5. कच्छपः
6. शशः
7. हस्तः
8. मीनः
9. विप्रः
10. कुटीरम्

1. ..... 2. ..... 3. .....

4. ..... 5. ..... 6. .....

7. ..... 8. ..... 9. .....

10. .....

IV. अस्मिन् वर्गप्रहेलिकायाम् दशपदानाम् दशविपर्ययाः सन्ति। तान् चित्वा लिखत।

(यहाँ वर्ग-प्रहेलिका में दस पदों के दस विपर्यय हैं। उन्हें चुनकर लिखिए।)

क	सः	र	नी[1]	मू[2]	
नि	व	लः		र्खः	सः
सू[10]	दि[3]	त	कृ[7]	शः	ल
र्यः	क[6]	शी[9]	त	ग्निः	अ[5,4]
र	टुः	म्	ल	ज[8]	न्तः
न्तः	ष्ट	प	थ	प	क

दशपदाः

1. सरसः
2. बुद्धिमान्
3. निशा
4. उद्यमी
5. बहिः
6. मधुरः
7. स्थूलः
8. अग्निः
9. उष्णः
10. चन्द्रः

1. ..... 2. ..... 3. .....

4. ..... 5. ..... 6. .....

7. ..... 8. ..... 9. .....

10. .....

7 वाक्य-रचना

वाक्य में सबसे पहले कर्ता को रखते हैं तथा अंत में क्रिया को रखते हैं; यथा–बालः क्रीडति। वाक्य निम्नलिखित तीन प्रकार के होते हैं :

1. कर्तृवाच्य, 2. कर्मवाच्य, 3. भाववाच्य।

कर्तृवाच्य =	कर्ता में ↓ प्रथमा विभक्ति बालः	कर्म में ↓ द्वितीया विभक्ति पुस्तकम्	क्रिया ↓ कर्ता के अनुसार पठति
कर्मवाच्य =	कर्ता में ↓ तृतीया बालेन	कर्म में ↓ प्रथमा पुस्तकम्	क्रिया ↓ कर्म के अनुसार पठ्यते
भाववाच्य =	कर्ता में ↓ तृतीया बालेन	कर्म ↓ नहीं होता	क्रिया ↓ भाव के अनुसार पठ्यते

षष्ठी कक्षा में केवल कर्तृवाच्य के अनुसार वाक्य रचना की जाएगी।

इसके लिए हम किसी भी धातु के एक लकार को ले लेते हैं। प्रत्येक लकार में तीन पुरुष होते हैं–प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष तथा उत्तम पुरुष।

प्रथम पुरुष के साथ अन्य पुरुष का प्रयोग होगा जो न श्रोता है न वक्ता। मध्यम पुरुष के साथ श्रोता अर्थात् मध्यम पुरुष की ही क्रिया लगेगी तथा उत्तम पुरुष के साथ केवल उत्तम पुरुष की ही क्रिया लगेगी। कर्ता तथा क्रिया का वचन एक ही होता है।

इस नियम का एक अपवाद है–भवत् शब्द = आप। इसका प्रयोग मध्यम पुरुष में न होकर प्रथम पुरुष में ही होता है। जैसे–भवान् गच्छति। भवन्तौ गच्छतः। भवन्तः गच्छन्ति।

तीनों पुरुषों के साथ शब्दों के प्रयोग को हम इस प्रकार भी समझ सकते हैं। मान लीजिए धातु रूपों के नौ क्रियापद रसगुल्ले हैं, इन्हें आपको घर में बाँटना है। तीन लोग बाहर गए हैं, तीन सामने हैं तथा तीन बाँटने वाले हैं। अब आप कैसे बाँटेंगे?

1. क्या एक के आगे ही सारे रसगुल्ले रख देंगे?
2. क्या स्वयं सबसे पहले खा लेंगे?
3. क्या जो सामने नहीं हैं उनके लिए उनका हिस्सा निकालकर रख देंगे?

निश्चित रूप से आपका उत्तर होगा कि सबसे पहले जो तीन लोग बाहर गए हैं उनके लिए उचित हिस्सा रख देंगे। जो सामने नहीं हैं उनको अर्थात् अन्य पुरुष को इस प्रकार पहला हिस्सा दे देंगे।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	गजः	गजौ	गजाः
प्रथम पुरुषः	खादति एकवचन	खादतः द्विवचन	खादन्ति बहुवचन

अब दूसरा हिस्सा जो सामने वाले श्रोता हैं उनको देना चाहिए तो हमने दूसरा हिस्सा एकवचन को एकवचन, द्विवचन को द्विवचन तथा बहुवचन को बहुवचन दे दिया।

दूसरा हिस्सा = श्रोता जो सामने हैं। (युष्मद् के रूपों की प्रथमा विभक्ति)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	त्वम्	युवाम्	यूयम्
	को एकवचन	को द्विवचन	को बहुवचन
मध्यम पुरुषः	खादसि	खादथः	खादथ

अब आखिरी हिस्सा बाँटने वालों को स्वयं खाना चाहिए।

आखिरी हिस्सा = वक्ता जो हम स्वयं हैं। (अस्मद् शब्द रूप की प्रथमा विभक्ति)

	अहम्	आवाम्	वयम्
	को एकवचन	को द्विवचन	को बहुवचन
उत्तम पुरुषः	खादामि	खादावः	खादामः

यदि हम इस प्रकार रसगुल्लों का वितरण करेंगे तो (कर्ता) हम उत्तम (पुरुष) कहलाएँगे। इस प्रकार वाक्य बनेंगे :

प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
गजः खादति गजौ खादतः गजाः खादन्ति	त्वम् खादसि युवाम् खादथः यूयम् खादथ	अहम् खादामि आवाम् खादावः वयम् खादामः

कर्तृवाच्य तालिका (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	भवान्, बालः, बाला, सः, एषः, एषा सा, देवः, छात्रा, एतत्	भवन्तौ, बालौ, बाले, तौ, एतौ, एते, ते, देवौ, छात्रे, एते	भवन्तः, बालाः, बालाः, ते, एते, एता, ताः, देवाः, छात्राः, एतानि
प्रथम पुरुष	— + पठति	+ पठतः	+ पठन्ति
मध्यम पुरुष	त्वम् + पठसि	युवाम् + पठथः	यूयम् + पठथ
उत्तम पुरुष	अहम् + पठामि	आवाम् + पठावः	वयम् + पठामः

इसी प्रकार लृट् लकार के लिए भी यही नियम होंगे :

प्रथम पुरुष	भवान्, नरः, देवः, लता, एषा, या, सः, एषः, यः + पठिष्यति	भवन्तौ, नरौ, देवौ, लते, एते, ये, तौ, एतौ, यौ + पठिष्यतः	भवन्तः, नराः, देवाः, लताः, एताः, याः, ते, एते, याः + पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	त्वम् + पठिष्यसि	युवाम् + पठिष्यथः	यूयम् + पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	अहम् + पठिष्यामि	आवाम् + पठिष्यावः	वयम् + पठिष्यामः

ध्यातव्यम्

- कर्तृपद (शब्द रूप) के क्रियापद (धातु रूप) से जुड़ने से वाक्य बनता है।
- कर्तृवाच्य के वाक्य बनाने के लिए कर्ता में प्रथमा विभक्ति लगाई जाती है।
- लकार वाक्य की आवश्यकता के अनुसार चुना जाता है।
- शब्द रूप का लिंग आवश्यकता के अनुसार कोई भी हो सकता है।
- प्रथम पुरुष के साथ अन्य पुरुष के कर्ता लगेंगे। जो हमारे सामने नहीं अर्थात् अस्मद् तथा युष्मद् को छोड़कर सभी शब्दों की प्रथमा विभक्ति के रूपों का प्रयोग प्रथम पुरुष के साथ होगा।
- धातु रूपों का प्रयोग स्त्रीलिङ्ग, पुल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग में समान रूप से किया जाता है; यथा–बलरामः पतति। रमा पतति। कन्दुकम् पतति।
- भवत् (आप) शब्द रूप का प्रयोग प्रथम पुरुष के साथ ही होता है।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. मध्यम पुरुष के साथ सिर्फ युष्मद् शब्दों की प्रथमा विभक्ति के रूपों का ही प्रयोग होगा।
2. उत्तम पुरुष के साथ सिर्फ अस्मद् शब्दों की प्रथमा विभक्ति के रूपों का ही प्रयोग होगा।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. अधोलिखितवाक्यानि शुद्धम् कुरुत।

(नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध कीजिए।)

(क) 1. भवान् तत्र पठसि। .....

2. बालकः कुत्र गच्छतः? .....

3. भवन्तः न क्रीडतः। .....

4. रामः वने गमिष्यतः। .....

5. तौ न पठन्ति। .....

(ख) 1. युवाम् अत्र आगच्छति। .....

2. वयम् पाठम् स्मरथः। .....

3. त्वम् पुस्तकम् आनयतः। .....

4. ते मोदकम् खादिष्यामः। .....

5. यूयम् हसथः। .....

(ग) 1. गंगा हिमालयात् निस्सरतः। .....

2. अश्वाः तीव्रम् धावसि। .....

3. आवाम् तडागे तरतः। .....

4. छात्राः कक्षायाम् लिखथ। .....

5. वृक्षाः छायाम् यच्छति। .....

(घ) 1. अहम् तु अद्य पिज़ाव्यञ्जनम् खादामः। .....

2. भवन्तः चायपानम् करोति। .....

3. भवान् अत्र गच्छसि। .....

4. भवन्तौ कदा गमिष्यथः? .....

5. किम् त्वम् आगच्छतः? .....

(ङ) 1. अहम् क्रीडितुम् न इच्छति। .....

2. वयम् अत्र न क्रीडतः। .....

3. आवाम् संस्कृतम् पठिष्यतः। .....

4. यूयम् तरणताले तरथः। .....

5. अश्ववारः अश्वात् पततः। .....

(च) 1. वयम् 'बागवान' इति चलचित्रम् द्रक्ष्यामि। .....

2. बालः पितरम् नमतः। .....

3. ते लते तत्र न पतति। .....

4. मुनयः हिमालये यजतः। .....

5. अम्बा जनकेन सह विद्यालयम् आगच्छतः। .....

(छ) 1. श्रमिकौ मैट्रोरेलयानाय भूमिं कर्षन्ति। .....

2. यूयम् कुत्र गच्छतः? .....

3. अहम् दूरदर्शने क्रिकेटक्रीडाम् पश्यावः। .....

4. त्वम् जलम् पिबतः। .....

5. युवाम् गृहे वसतः। .....

(ज) 1. श्वः अवकाशः सन्ति। .....

2. सुपोषः पठनाय विदेशम् किमर्थम् गच्छसि? .....

3. श्रुतिः विदेशीछात्रैः सह अत्र एव पठिष्यसि। .....

4. जैसिया रुवीरः च वदथः। .....

5. रोहितः मात्रा सह यजन्ति। .....

(झ) 1. मूषकाः इतः-ततः कूर्दति। .....

2. रविवासरे पोलियो टीकाकरणं भविष्यन्ति। .....

3. अहम् प्राकृतिक चिकित्साशिविरे गच्छति। .....

4. सर्वे कोलाहलं कुरूथ। .....

5. यूयम् पाठम् स्मरन्ति। .....

(ञ) 1. युवाम् पुष्पाणि न त्रोटयावः। .....

2. मम अम्बा भोजनम् पचसि। .....

3. त्वम् पचति। .....

4. अहम् रोटिकाम् खादामः। .....

5. आवाम् पितामहाय दुग्धं यच्छामः। .....

II. 'क' वर्गस्य कर्ताणाम् 'ख' वर्गे क्रियाः सन्ति। तेषां समुचितं मेलनं कुरुत-

('क' वर्ग के कर्तापदों की क्रियाएँ 'ख' वर्ग में हैं। उनका उचित मिलान कीजिए।)

क	ख
1. भवान् अत्र	(क) क्रीडतः
2. सः जनकम्	(ख) धावन्ति
3. लते वृक्षात्	(ग) हसथः
4. त्वम् पत्रम्	(घ) चलामः
5. आवाम् संस्कृतम्	(ङ) उड्डयन्ति
6. वायुयानानि आकाशे	(च) पठावः
7. वयम्	(छ) लिखसि
8. युवाम् किमर्थम्	(ज) पततः
9. तौ गृहे एव	(झ) नमति
10. क्रीडकाः क्रीडाक्षेत्रे	(ञ) आगच्छति

8 संख्याः

एक से चार तक संख्या तीनों लिंगों में लिखी जाती है। उसके बाद उन्नीस तक सभी शब्द नपुंसकलिंग में तथा बीस स्त्रीलिंग में लिखा जाता है।

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1 एकः	एका	एकम्
2 द्वौ	द्वे	द्वे
3 त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
4 चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि

5 पञ्च	6 षट्	7 सप्त
8 अष्ट	9 नव	10 दश
11 एकादश	12 द्वादश	13 त्रयोदश
14 चतुर्दश	15 पञ्चदश	16 षोडश
17 सप्तदश	18 अष्टादश	19 नवदश/एकोनविंशतिः
20 विंशतिः		

संख्यावाचिनः अंकाः

इन्हीं संख्यावाची अंकों से ही अन्य अंक; जैसे–1, 2, 3, 4 भी कुछ परिवर्तन करके बनाए गए हैं।

अंकतालिका

१

२

३

४

५

६

७

८ 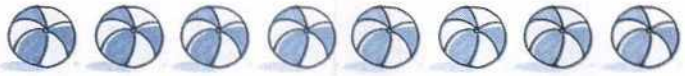

९

१०

ध्यातव्यम्

- संख्यावाची शब्द 'विशेषण' होते हैं।
- विशेष्य के अनुसार ही संख्यावाची शब्दों के लिंग, विभक्ति तथा वचन का प्रयोग होगा।
- एक से चार तक की संख्या के शब्द रूप तीनों लिंगों में चलते हैं।
- पञ्च से आगे की संख्या के शब्द रूप तीनों लिंगों में एक समान होते हैं।

स्मरणीयाः बिन्दवः

निव के साथ प्रयोग होने वाले संख्यावाची शब्द दो तरह से लिखे जाते हैं; उदाहरणार्थ–

1. एकोनविंशतिः = एक कम बीस
2. नवदश = दस और नौ उन्नीस

प्रायोगिकाभ्यासः

- **अधोप्रदत्तानि वस्तूनि गणयित्वा उचित संख्यावाचिपदेन रिक्तस्थानानि पूरयत।**

(नीचे दी गई वस्तुओं की गिनती करके उचित संख्यावाची पद से रिक्त स्थानों को पूरा कीजिए।)

1. लेखनी   ....

2. द्विचक्रिका:   ....

3. गजौ   ....

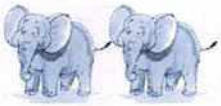

4. लता:   ....

5. आभूषणानि   ....

6. पुष्पम्   ....

7. सङ्गणकयन्त्रे   ....

8. चन्द्रः   ....

9. महिला:   ....

10. चक्राणि .....

11. वृक्षाः .....

12. तितलिकाः .....

13. मक्षिके .....

14. पत्राणि .....

15. तूलिकाः .....

16. वृक्षाः .....

17. कन्दुकाः 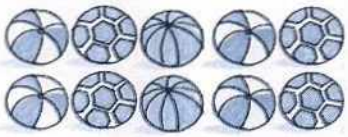 .....

18. पत्राणि .....

19. घटाः .....

20. छत्राणि .....

9 अशुद्धि-संशोधनम्

अशुद्धि-संशोधन करने के लिए निम्नलिखित नियमों का ध्यान रखना चाहिए :

1. क्रिया संबंधी दोष होने पर 'लकार' का परिवर्तन न करके जिस लकार में अशुद्ध पद है, उसी लकार में शुद्ध किया जाना चाहिए; यथा–**तौ तत्र पठति** का **तौ तत्र पठतः** होना चाहिए। **तौ तत्र पठिष्यतः** इस प्रकार लकार बदलना ठीक नहीं है।

2. कारक संबंधी अशुद्ध पद को शुद्ध करते समय उपपद विभक्तियों के नियमों का सदा ध्यान रखें; यथा–**सः विद्यालयस्य प्रति गच्छति** का शुद्ध वाक्य **सः विद्यालयम् प्रति गच्छति** होगा, क्योंकि प्रति के साथ हमेशा द्वितीया विभक्ति लगती है (जहाँ जाया जाए उसमें)।
3. विशेष्य तथा विशेषण, गुण और गुणी में समान विभक्ति, वचन तथा लिंग का प्रयोग होता है। इस नियम को सदा याद रखें;
   यथा–कृष्णः सर्पः गच्छति।
   श्वेतम् पुष्पम् पतति।
   पवित्रा नदी वहति।
4. संख्यावाची शब्दों की विभक्ति, वचन और लिंग संज्ञा पदों के अनुसार होना चाहिए;
   यथा–तिस्रः महिलाः।
   त्रयः पुरुषाः।
   त्रीणि पुस्तकानि।
5. 'भवत्' शब्द का अर्थ यद्यपि 'आप' होता है तो भी इसके साथ प्रथम पुरुष की क्रियाएँ ही लगती हैं; यथा–भवान् आगच्छति।
6. शब्द रूप तथा धातु रूपों का भी उचित प्रयोग होना चाहिए। यथा–छात्रा आचार्यम् **नंस्यति** न कि छात्रा आचार्यम् **नमिष्यति**।

ध्यातव्यम्

- वाक्य में से केवल दोष को निकालकर वाक्य शुद्ध कर देना चाहिए। किसी अन्य शुद्ध पद में कभी परिवर्तन नहीं करना चाहिए।
- अशुद्धि-शोधन करने से पूर्व सभी रूप, कारक नियम, विशेष्य तथा विशेषण संबंधी नियम इत्यादि को ध्यानपूर्वक समझ लेना चाहिए।
- अशुद्धि क्या है यह समझ आने पर सभी नियमों को ध्यान में रखते हुए उसे शुद्ध करना चाहिए।
- शुद्ध करते समय वर्तनी का भी अवश्य ध्यान रखें।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. 'भवत्' के शब्द रूपों के साथ क्रियापद जोड़ने के लिए प्रथम पुरुष का ही प्रयोग होता है। ऐसे सभी विशेष नियम या अपवादों को ध्यान में रखना चाहिए।
2. यदि संख्या एक से चार तक है तो स्त्रीलिंग के साथ स्त्रीलिंग संख्यावाची पदों का प्रयोग होगा। इसी तरह पुंल्लिग के साथ पुंल्लिग तथा नपुंसकलिंग के साथ नपुंसकलिंग का प्रयोग होगा।
3. एकवचन के कर्तापद के साथ एकवचन, द्विवचन के साथ द्विवचन तथा बहुवचन के साथ बहुवचन की क्रिया का प्रयोग होना चाहिए।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. अधोलिखितवाक्यानि लिङ्ग-विभक्ति-पुरुष-वचनानुसारेण शुद्धं कुरुत।

(नीचे लिखे वाक्यों को लिंग, विभक्ति, पुरुष तथा वचन के अनुसार शुद्ध कीजिए।)

1. अश्ववारः अश्वेन पतति। .....
2. आकाशात् सूर्योदयः भवति। .....
3. छात्रा कक्षया गच्छति। .....
4. बालः कन्दुकेन क्रीडन्ति। .....

5. एषा मम जनकः अस्ति। .....

6. सा मम मित्रम् सन्ति। .....

7. ते पाचकाः पचति। .....

8. एषः मम सुता अस्ति। .....

9. सा संस्कृतम् पठतः। .....

10. एतानि आम्रे पततः। .....

11. एते पत्रम् मम जनकस्य अस्ति। .....

12. अहम् संस्कृतम् पठसि। .....

13. छात्राः रामायणं पठतः। .....

14. मन्दः समीरः वहसि। .....

15. भवान् वेदम् पठसि। .....

16. भवन्तौ अपि पठथः। .....

17. वृक्षस्य लता नमन्ति। .....

18. बालः बालैः सह क्रीडसि। .....

19. एषा कन्या लेखम् लिखन्ति। .....

20. एकः अजा चरति। .....

21. द्वौ बालिके तत्र तिष्ठतः। .....

22. वृक्षस्य उपरि एका वानरः अस्ति। .....

23. तत्र त्रीणि महिलाः तिष्ठन्ति। .....

24. अत्र त्रयः पुष्पाणि पतन्ति। .....

25. रुवीरः, रोहितः, अशोकः च मित्राः सन्ति। .....

खण्ड 'ख'

रचनात्मकं कार्यम्

10 चित्र-वर्णनम्

1. चित्र को देखकर वाक्य बनाने के लिए मंजूषा में दिए गए शब्दों की सहायता लेनी चाहिए।
2. मंजूषा के शब्दों की विभक्ति इत्यादि आवश्यकता के अनुसार बदली जा सकती है।
3. मंजूषा के शब्दों के अतिरिक्त आप स्वयं चित्र के विषय में क्या अनुभव करते हैं उसे भी लिख सकते हैं। उदाहरण के लिए नीचे दिए गए चित्रों को देखिए :

उदाहरण–1

मयूरः, मेघाः, नृत्यति, गर्जन्ति, राष्ट्रीय खगः, वर्षा, सर्पान्, खादति, बालिका

1. चित्रे एकः मयूरः अस्ति।
2. यदा वर्षा भवति तदा मयूराः नृत्यन्ति।
3. मयूरः राष्ट्रीय खगः अस्ति।
4. एषः सर्पान् खादति।
5. एका बालिका मयूरम् पश्यति।

उदाहरण–2

शुकस्य, चित्रम्, शुकः, दृढबीजम्, वृक्षे, वर्णः, तिष्ठति, हरितः

1. एतत् चित्रम् शुकस्य अस्ति।
2. शुकः वृक्षे तिष्ठति।
3. शुकः दृढबीजम् खादति।
4. अस्य वर्णः हरितः भवति।
5. एषः बालानाम् प्रियः खगः भवति।

ध्यातव्यम्

- वाक्य छोटे व स्पष्ट होने चाहिए।
- चित्र को देखकर मंजूषा में से शब्दों की सहायता लेते हुए कर्ता पदों का चुनाव कीजिए, पुनः उसी के अनुसार क्रिया पदों को लिखिए। मंजूषा के सभी शब्दों का प्रयोग करना जरूरी नहीं है।
- बीच-बीच में अव्यय पदों का प्रयोग किया जा सकता है।
- मंजूषा के शब्दों का प्रयोग ध्यानपूर्वक करना चाहिए।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. मंजूषा के शब्दों की विभक्तियों को बदलकर भी प्रयोग कर सकते हैं।
2. मंजूषा के अतिरिक्त दूसरे शब्दों को भी वाक्यों में प्रयुक्त किया जा सकता है।

प्रायोगिकाभ्यासः

- **अधोदत्तानि चित्राणि दृष्ट्वा पञ्चवाक्येषु वर्णनं कुरुत। सहायतार्थं मञ्जूषायां पदाः प्रदत्ताः।** (नीचे दिए गए चित्रों को देखकर पाँच वाक्यों में उसका वर्णन कीजिए। सहायता के लिए मंजूषा में शब्द दिए गए हैं।)

1.

तिष्ठति, कपोतः, श्वेतः, कीटान्, शान्तिप्रियः, वृक्षे, भक्षयति, खगः, पालयन्ति, गृहे

2.

तडागस्य, मीनाः, तडागे, तरन्ति, कच्छपः, वर्तकाः, मीनम्, खादति, कमलानि, विकसन्ति, वकः

3.

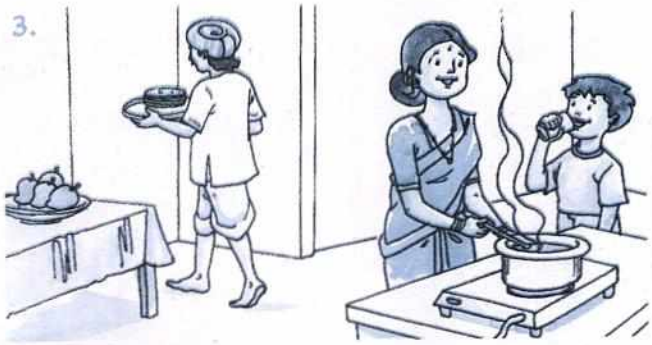

पाकशाला, सूदः, माता, पचति,
सन्ति, नयति, जलम्, भोजनम्,
आम्राणि, गच्छति, पाकशालायाम्

4.

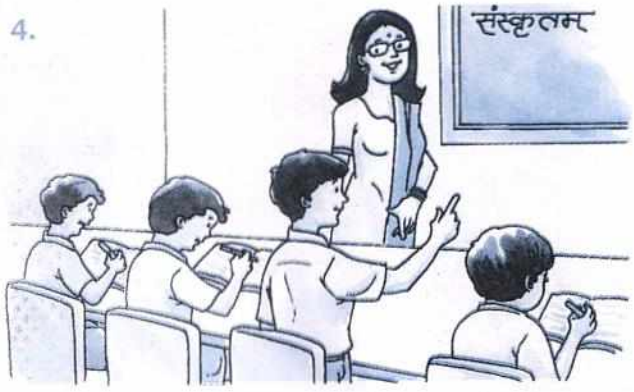

एतत्, संस्कृत कक्षायाः, शिक्षिका,
यच्छति, श्यामपट्टः, पृच्छति,
लिखन्ति, छात्राः, कक्षायाम्,
प्रश्नम्, उत्तरम्

5.

फलानि, वनस्य, वानराः, वृक्षाः,
वृक्षेषु, खादन्ति, सिंहः, मृगः,
गर्जति, धावति, वनस्य

6.

गृहस्य, पितामहः, गृहे, पितामही,
नमति, दुग्धम्, आनयति, जनकः,
समाचार-पत्रम्, क्रीडनकेन, बालः

7.

भवन्ति, चित्रे, अपि, मेघाः,
वृक्षौ, वर्षाकालस्य, वर्षन्ति,
मण्डूकाः, प्रसन्नाः, भवन्ति
चित्रम्, बालाः, स्तः

8.

उद्यानम्, वृद्धौ, व्यायामम्,
बालकौ, क्रीडन्ति, तिष्ठति,
कुरुतः, पादकन्दुकम्,
छात्राः, भ्रमतः

9.

पञ्जरे, गजौ, सिंहः, तिष्ठति, जन्तुशाला, वानराः, पश्यन्ति, भ्रमतः, चित्रकः, वृक्षे, कदलीफलम्, खादतः, इतःततः, अपि, सन्ति, जनाः

10.

यात्राम्, कुर्वन्ति, अनेकानि, तिष्ठति, भारते, हिमालयः, गच्छन्ति, पूर्वदिशायाम्, प्रहरी इव, तीर्थस्थानानि, सन्ति, सैनिकः, पर्वतः, तिष्ठति, रक्षति

11.

वृक्षे, वानरः, मकराय, मकरः, सरिता, नारिकेल, तिष्ठति, वृक्षौ, सरितायाम्, तरति, जम्बुफलम्, यच्छति

12.

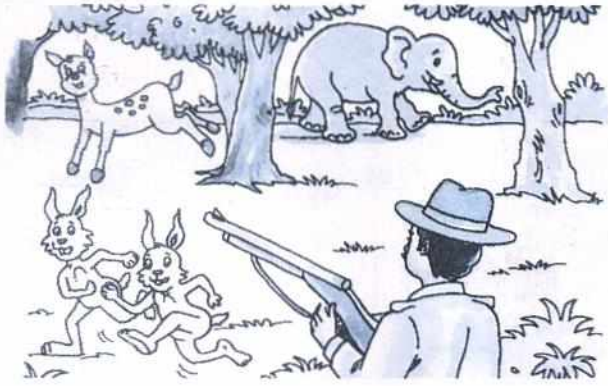

वनस्य, व्याधः, अनेके, वृक्षाः, अपि, मृगः, धावति, गजः, शशकौ, धावतः

13.

स्वच्छ भारत-अभियानम्, बालाः, बालिकाः, च, जनाः, मार्जनम् कुर्वन्ति एव, अवकरपात्रेषु, क्षिपन्ति अवकरम्।

14.

अनेकानि, महिला, वस्त्राणि, विपणानि, पश्यति, कान्दविकः, खादति, मोदकम्, जनाः, इतः ततः, भ्रमन्ति

15.

ग्रामस्य दृश्यम्, कूपः, महिले, जलम्, कुक्कुटौ, कुक्कुरः, यदा, बुक्कति, धावतः, नगरेषु, जलसंकटम्, जलम् एव जीवनम्, अद्य

11 सङ्केताधारित-वार्त्तालापः

वार्त्तालाप या संवाद का अर्थ है–बातचीत। संवाद प्रायः लघु व सरल वाक्यों का ही दिया जाना चाहिए। जिस प्रकार बातचीत में प्रथम वाक्य का द्वितीय वाक्य से तथा द्वितीय वाक्य का तृतीय वाक्य से सीधा संबंध होता है, उसी प्रकार संवाद लिखते समय भी पहले तथा दूसरे वाक्यों को देखकर ही संवाद पूर्ति की जानी चाहिए। वार्त्तालाप के लिए मंजूषा में दिए पदों का ही प्रयोग किया जाना चाहिए। वार्त्तालाप प्रश्नात्मक है या आदेशात्मक यह भी ध्यान में रखना चाहिए। उत्तर के वाक्य रेखांकित करने चाहिए। उदाहरण के लिए निम्नलिखित संवाद देखिए–

अङ्का – त्वम् कुत्र गच्छसि?
इतिशा – अहम् विश्वविद्यालये गच्छामि।
अङ्का – त्वम् तत्र कस्मिन् विषये प्रवेशं प्राप्त्यर्थम् गच्छसि?
इतिशा – अहम् तु संस्कृतस्य अध्ययनम् कृत्वा वास्तुकलायाः क्षेत्रे प्रवेशप्राप्तुम् इच्छामि।
अङ्का – तर्हि अत्र आगच्छ प्रथमम् मया सह कार्यालयम् गत्वा प्रवेशपत्रम् पूरय।
इतिशा – अस्तु। शीघ्रं चल।

त्वम्, अहम्, गच्छसि, अत्र, इच्छामि

ध्यातव्यम्

- वार्त्तालाप लिखते समय पहले पूरा संवाद ध्यान से पढ़ लेना चाहिए।
- रिक्त स्थान भरने के लिए पहले के तथा आगे के वाक्यों के भाव को समझकर ही रिक्त स्थान की पूर्ति करनी चाहिए।
- कर्तापद व क्रियापद का ध्यान रखना चाहिए।
- वचनों को भी ध्यान में रखकर ही रिक्त स्थानों की पूर्ति करनी चाहिए।
- अव्ययों का प्रयोग ध्यानपूर्वक करना चाहिए।
- वार्त्तालाप के रिक्त स्थान भरने के लिए मंजूषा के ही सभी शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- अपनी इच्छा से मंजूषा के पदों में परिवर्तन नहीं किया जाना चाहिए, न ही मंजूषा के बाहर के पदों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- मौखिक रूप से पहले मंजूषा के सभी पदों का चयन करके वाक्यों में लगाकर देख लेना चाहिए।

प्रायोगिकाभ्यासः

• **अधोलिखितवार्त्तालापम् मञ्जूषायाः सहायतया पूरयत।**
(नीचे लिखे वार्त्तालाप को मंजूषा की सहायता से पूरा कीजिए।)

1. समयः – भो। अहम् समयः (1) ..... । तव नाम
(2) ..... अस्ति?

श्रेयः – (3) ..... नाम श्रेयः अस्ति?

समयः – भवान् (4) ..... गच्छति?

श्रेयः – अहम् तु गृहम् (5) ..... ।

समयः – त्वम् कुत्र (6) .....?

श्रेयः – (7) ..... शिवालिकनगरे वसामि।

समयः – अहम् अपि शिवालिकनगरे (8) ..... ।

श्रेयः – शोभनम्, त्वम् अपि मम (9) ..... चल।

समयः – नैव। अधुना तु अहम् स्वपितामहेन सह आपणम् गच्छामि। मम (10) .....
आगच्छति। नमस्कारः।

श्रेयः – नमस्कारः। पुनर्मिलामः।

मम, अस्मि, पितामहः, कुत्र, वसामि, वससि, किम्, अहम्, गृहम्, गच्छामि

2. निन्हा – अरे चीनू! त्वम् कुत्र (1) .....?

चीनू – अहम् विपणम् (2) ..... ।

निन्हा – अहम् अपि तत्र (3) ..... गच्छामि। सह एव (4) ..... ।

चीनू – किम् तव भ्राता (5) ..... आगच्छति?

निन्हा – नहि सः तु अम्बया सह गृहे एव (6) ..... ।
अहम् तस्मै एकम् क्रीडनकम् (7) ..... ।

चीनू – किम् सः कन्दुकेन (8) ..... क्रीडति?

निन्हा – आम् सः (9) ..... सह क्रीडति।

चीनू – तर्हि तु तस्मै एकम् (10) ..... एव आनय।

अपि, एव, चलावः, अस्ति, गच्छामि, आनेष्यामि, कन्दुकम्, गच्छसि, सह, कन्दुकेन

3. समीहा – अहम् (1) ..... विद्यालयम् न गमिष्यामि।

रुवीरः – त्वम् किमर्थम् विद्यालयम् न (2) .....?

समीहा – अद्य अहम् ज्वरेण पीडिता (3) .....।

जैसिया – किम् चिकित्सकः कोऽपि (4) ..... अयच्छत्?

समीहा – आम् (5) ..... मह्यम् एताः गोलिकाः (6) .....।

रुवीरः – तर्हि तु गोलिकाम् खादित्वा त्वम् (7) ..... कुरु।

जैसिया – अहम् (8) ..... आनयामि।

समीहा – धन्यवादाः।

जैसिया रुविरौ – अस्तु, आवाम् (9) ..... (10) .....।

गमिष्यसि, अस्मि, श्वः, अयच्छत्, चिकित्सकः ओषधिम्, आगमिष्यावः, चलावः, विश्रामम्, जलम्

4. श्रुतिः – भो स्नेहे! किम् (1) ..... श्वः चलचित्रम् द्रष्टुम् गमिष्यामः?

स्नेहा – माता कथयति यदा विद्यालयस्य गृहकार्यम् (2) ..... करिष्यामः (3) ..... एव चलचित्रदर्शनाय गमिष्यामः।

ऋचा – मम (4) ..... तु पूर्णम् अस्ति।

श्रुतिः – अहम् (5) ..... शीघ्रम् पठनाय तिष्ठामि।

स्नेहा – वयम् चलचित्रदर्शनाय (6) ..... गमिष्यामः?

ऋचा – वयम् (7) ..... प्रिया इति चित्रागारम् (8) .....।

स्नेहा – किम् वयम् तत्र जॉरेसिकपार्क इति चलचित्रम् (9) .....?

ऋचा – आम् (10) ..... तत्र जॉरेसिकपार्कम् चलचित्रम् एव द्रक्ष्यामः।

वयम्, द्रक्ष्यामः, वयम्, चलचित्रदर्शनाय, कुत्र, गमिष्यामः, तु, गृहकार्यम्, तदा, पूर्णम्।

5. अर्चना – अद्य सोमवासरः अस्ति किम् पितृव्यः अद्यः गृहे (1) .....?

वन्दना – नहि (2) ..... तु श्वः मंगलवासरे एव आगमिष्यति।

अर्चना – किम् पितृव्या अपि तेन (3) ..... आगमिष्यति?

वन्दना – आम् तेन सह (4) ..... अपि आगमिष्यति।

अर्चना – तर्हि तु मम भगिनी तान्या (5) ..... दीपकः च अपि आगमिष्यतः।

वन्दना – शोभनम्। वयम् सर्वे मिलित्वा (6) ..... क्रीडाक्षेत्रम् गमिष्यामः।

अर्चना – आम्! तत्र च पादकन्दुकेन (7) .....।

वन्दना – मम समीपे कैरमबोर्डः, शतरंजः चापि (8) .....।

अर्चना – प्रथमम् तु (9) ..... शतरंजः एव क्रीडिष्यामः।

वन्दना – तर्हि सायंकाले एव (10) ..... गमिष्यामः।

पितृव्यः, भ्राता, सह, क्रीडनाय, वयम्, क्रीडाक्षेत्रम्, आगमिष्यति, पितृव्या, स्तः, क्रीडिष्यामः

6. तान्या – (1) ..... किम् पठसि?

दीपकः – अहम् तु संस्कृतस्य पुस्तकम् (2) .....।

तान्या – किम् तव विद्यालये संस्कृत भाषा अनिवार्यम् (3) .....?

दीपकः – नैव मम विद्यालये जर्मनभाषा (4) ..... अस्ति।

तान्या – किम् त्वम् जर्मनभाषाम् अपि (5) .....?

दीपकः – नैव अहम् स्वदेशस्य (6) ..... संस्कृतस्य विषये एव ज्ञातुम् इच्छामि।

तान्या – अहम् अपि जर्मनभाषाम् फ्रेञ्चभाषाम् च विहाय (7) ..... एव पठामि।

दीपकः – केचन् छात्राः तु संस्कृतम् (8) ..... जर्मनभाषां फ्रेञ्चभाषां वा पठन्ति।

एतत् तु न (9) .....।

तान्या – संस्कृतस्य ज्ञानेन एव (10) ..... स्वदेशस्य संस्कृतिम् गौरवम् च ज्ञातुम् शक्नुमः न तु विदेशीभाषाणाम् ज्ञानेन।

वयम्, शोभनम्, विहाय, पठामि, संस्कृतम्, भाषाम्, पठसि, अपि, अस्ति, त्वम्

7. अजः – (1) ..... चरामि, किम् (2) ..... अपि चरसि? $1 \times 10 = 10$

अश्वः – आम् आवाम् चरावः। पश्य शशकाः अपि अत्र एव (3) .....।

अजः – (4) ..... किम् खादन्ति?

अश्वः – शशकाः तु शाकानि (5) .....।

अजः – तर्हि ते तु (6) ..... चरन्ति।

अश्वः – आम् ते न चरन्ति ते तु खादन्ति।

शशकः – हे अश्व! किम् मानवाः वृक्षान् खादन्ति?

अश्वः – नैव मानवाः वृक्षान् न खादन्ति ते तु (7) ..... फलानि (8) ..... एव खादन्ति।

शशकः – तर्हि ते (9) ..... किमर्थम् छिन्नम् कुर्वन्ति?

अश्वः – परोपकारी वृक्षाः मानवेभ्यः फलानि शुद्धम् वातावरणम् च यच्छन्ति ते (10) ..... तान् वृक्षान् एव नाशयन्ति। एतत् तु न शोभनम्।

त्वम्, आगच्छन्ति, शशकाः, न, अहम्, वृक्षान्, शाकान्, खादन्ति, मानवाः, अन्नानि

8. काकः – अहम् तु 'का' 'का' इति करोमि अतएव मम नाम (1) ..... अस्ति।

काकः – मम (2) ..... कृष्णम् अस्ति पिकस्य वर्णम् अपि (3) ..... भवति।

पिकः – कुक्कुटः तु कुट् कुट् एव करोति अतएव वयम् तम् (4) ..... कथयामः।

कुक्कुटः – न तु मम स्वरः एव सुन्दरः, न मम पिच्छम् एव (5) ..... अस्ति। मयूरस्य

(6) ..... सुन्दरम् भवति तदा एव सः भारतस्य (7) ..... अस्ति।

मयूरः – संसारे तु सर्वेषाम् महत्त्वम् भवति। कुक्कुटस्य (8) ..... श्रुत्वा एव प्रातःकाले जनाः उत्तिष्ठन्ति।

कुक्कुटः – यदा ..... (9) स्वप्रियस्य आगमानस्य प्रतीक्षाम् कुर्वन्ति (10) ..... काकस्य स्वरम् एव तान् प्रसन्नम् करोति।

सुन्दरम्, कुक्कुटः, जनाः, वर्णम्, कृष्णम्, पिच्छम्, काकः, तदा, स्वरम्, राष्ट्रपक्षी

9. चिनॉय – तव मातामही (1) ..... करोति?

स्नेहा – (2) ..... मातामही तु उद्याने भ्रमति।

चिनॉय – किम् तव मातामहः उद्याने न (3) .....?

स्नेहा – मम मातामहः अपि (4) ..... उद्याने भ्रमति।

चिनॉय – मम पितामहः पितामही चापि अस्मिन् उद्याने एव (5) .....।

स्नेहा – तव अम्बा (6) ..... अस्ति?

चिनॉय – मम (7) ..... अपि अत्र एव भ्रमणम् करोति।

स्नेहा – किम् तव (8) ..... अपि सायंकाले भ्रमति?

चिनॉय – मम जनकः तु प्रातःकाल अत्र आगच्छति। सर्वे (9) ..... व्यायामम् (10) .....।

मम, भ्रमति, उद्याने, कुत्र, किम्, स्तः, जनकः, अम्बा, कुर्वन्ति, प्रातः

10. जया – यदा अहम् तव चित्रम् (1) ..... तदा हसामि।

हिमानी – त्वम् मम चित्रे हसनस्य किम् कारणम् (2) .....?

जया – अस्मिन् (3) ..... त्वम् पतसि सर्वे च हसन्ति।

हिमानी – अन्यम् चित्रम् पश्य। अस्मिन् चित्रे एषः (4) ..... अस्ति।

जया – एषः मम सहोदरः (5) .....।

हिमानी – (6) ..... सह कः तिष्ठति?

जया – तेन सह मम जनकः (7) ..... ।

हिमानी – एषा सुन्दरी कन्या (8) ..... अस्ति?

जया – एषा तु मम (9) ..... अस्ति।

हिमानी – (10) ..... तव अम्बायाः चित्रम् अत्र न अस्ति?

जया – मम अम्बा तु स्वदूरभाषयन्त्रेण चित्रम् कर्षति।

पश्यसि, अस्ति, पश्यामि, तेन, तिष्ठति, का, कः, चित्रे, किम्, भगिनी

खण्ड 'ग'

अपठित-अवबोधनम्

12 सरला: गद्यांशा:

40-50 पदपरिमिता:

अपठित गद्यांश के उत्तर देते समय विद्यार्थी निम्नलिखित बातों को समझ लें :

1. पहले गद्यांश को अच्छी तरह से पढ़ें।
2. गद्यांश के भाव को ग्रहण करें।
3. उपपद तथा कारक विभक्तियों का ध्यान रखें।
4. उत्तर के शब्द अथवा वाक्यों को पूरे ध्यान से उतारें। उदाहरण के लिए देखिए :

उदाहरण–1

1. एकस्मिन् नगरे द्वौ छात्रौ सुमित: रोहित: च विद्यालयात् गृहम् प्रति गच्छत:। मार्गे तौ एकं शिलाखण्डं पश्यत:। सुमित: रोहितम् कथयति–हे मित्र! यदि कश्चित् अन्य: बाल: शिलाखण्डं न द्रक्ष्यति, तदा अवश्यमेव पतिष्यति। यानानि अपि इत: गच्छन्ति आगच्छन्ति च। सम्भवत: अस्य प्रतिघातेन यानानि पतेयु:। रोहित: कथयति–शिलाखण्डस्य अपनयनम् अस्माकं कर्त्तव्यम्। आगच्छ आवाम् पूर्णबलेन एतत् शिलाखण्डम् अपनेष्याव:।

I. अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तरम् एकपदेन लिखत।

(नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर एक पद में लिखिए।)

(क) द्वौ छात्रौ कुत्र गच्छत:?

उत्तर : गृहम्।

(ख) तौ मार्गे किम् पश्यत:?

उत्तर : शिलाखण्डम्।

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(पूर्ण वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) शिलाखण्डस्य अपनयनम् केषाम् कर्त्तव्यम्?

उत्तर : शिलाखण्डस्य अपनयनम् अस्माकम् कर्त्तव्यम्।

(ख) क: कथयति–आवाम् पूर्णबलेन एतत् शिलाखण्डम् अपनेष्याव:?

उत्तर : रोहित: कथयति–आवाम् पूर्णबलेन एतत् शिलाखण्डम् अपनेष्याव:।

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

(क) 'प्रतिघातेन' इति पदे का विभक्ति: वचनम् च किम्?

(*i*) प्रथमा विभक्ति:, एकवचनम् (*ii*) सप्तमी विभक्ति:, एकवचनम्

(*iii*) तृतीया–विभक्ति:, एकवचनम्

उत्तर : (*iii*) तृतीया विभक्ति; एकवचनम्।

(ख) अनुच्छेदे 'पूर्णशक्त्या' इति पदाय किम् पदम् प्रयुक्तम्?

(*i*) शिलाखण्डम् (*ii*) प्रतिघातेन (*iii*) पूर्णबलेन (*iv*) बलेन

उत्तर : (*iii*) पूर्णबलेन।

उदाहरण–2

2. देवस्य गृहस्य समीपे एकम् उद्यानम् अस्ति। तत्र जनाः प्रतिदिनं भ्रमन्ति। अत्र विविध वर्णानि पुष्पाणि सन्ति। तानि श्वेतानि, नीलानि, रक्तानि बभ्रूणि च सन्ति। पुष्पेषु भ्रमराः अपि भ्रमन्ति। अत्र चित्रलाः अपि भ्रमन्ति। मधुमक्षिकाः पुष्पेभ्यः मधुसंग्रहम् कुर्वन्ति।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) विविधानि पुष्पाणि कुत्र सन्ति?

उत्तर : उद्याने

(ख) मधुमक्षिकाः पुष्पेभ्यः किम् कुर्वन्ति?

उत्तर : मधुसंग्रहम्।

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(पूर्ण वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) उद्यानम् कुत्र अस्ति?

उत्तर : उद्यानम् देवस्य गृहस्य समीपे अस्ति।

(ख) उद्याने चित्रलाः किम् कुर्वन्ति?

उत्तर : उद्याने चित्रलाः भ्रमन्ति।

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

(क) 'भ्रमराः' इति पदे का विभक्तिः वचनं च किम् अस्ति?

(*i*) प्रथमा विभक्तिः, बहुवचनम्

(*ii*) द्वितीया विभक्तिः बहुवचनम्

(*iii*) द्वितीया विभक्तिः, एकवचनम्

उत्तर : (*i*) प्रथमा विभक्तिः, बहुवचनम्।

(ख) उचितमेलनं कुरुत।

शब्दाः	**अर्थाः**
(*i*) बभ्रूणि	मधुमक्खियाँ
(*ii*) मधुमक्षिकाः	भूरे

उत्तर : (*i*) भूरे (*ii*) मधुमक्खियाँ

प्रायोगिकाभ्यासः

• अधोलिखितगद्यांशान् पठित्वा यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत।

(निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।)

1. कृषः एकः श्रेष्ठः बालः अस्ति। सः प्रतिदिनम् विद्यालये गच्छति। तस्य विद्यालयः कलानगरे अस्ति। तस्य विद्यालये समीपः नामकम् छात्रः अपि पठति। तौ विद्यालयात् मध्याह्ने आगच्छतः। तदा तौ क्रीडाक्षेत्रे क्रीडतः। कृषः समीपः च षष्ठी-कक्षायाम् पठतः। कृषः कदापि असत्यम् न वदति। समीपः अपि सदा सत्यम् वदति।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) श्रेष्ठः बालः कः अस्ति? (कृषः/समीपः) .....

(ख) कृषः समीपः च कुत्र क्रीडतः? (विद्यालये/क्रीडाक्षेत्रे) .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) कृषस्य विद्यालयः कुत्र अस्ति?

.....

(ख) तौ कुत्र क्रीडतः?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

(क) विभक्तिम् लिखत-

1. कक्षायाम् (*i*) षष्ठी (*ii*) सप्तमी (*iii*) पंचमी .....
2. विद्यालयात् (*i*) चतुर्थी (*ii*) पञ्चमी (*iii*) षष्ठी .....
3. क्रीडाक्षेत्रे (*i*) पंचमी (*ii*) द्वितीया (*iii*) सप्तमी .....

(ख) 'असत्यम्' इति पदस्य अर्थं चित्वा लिखत। .....

(*i*) सच (*ii*) झूठ (*iii*) सत्य

2. दिल्लीनगरे अपि एका जन्तुशाला अस्ति। तत्र पञ्जरे सिंहा: गर्जन्ति। तत्र बहव: मृगा: अपि सन्ति। मृगा: चरन्ति इत: तत: च धावन्ति। तत्र गजा:, भल्लुका:, चित्रका: अपि सन्ति। एक: मयूर: नृत्यति। वृक्षे काक:, चटक: श्येन: च तिष्ठन्ति। कुक्कुट: विचित्र: वदति। कपोत: शुक: च उलूकम् पश्यत:।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) एका जन्तुशाला कुत्र अस्ति? .....

(ख) विचित्र: क: वदति? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) मृगा: किम् कुर्वन्ति?

.....

(ख) वृक्षे के तिष्ठन्ति?

.....

III. उचितमेलनं कुरुत।

(उचित मिलान कीजिए।)

(क) श्येन:	(*i*) तोता
(ख) शुक:	(*ii*) मुर्गा
(ग) कुक्कुट:	(*iii*) उल्लू
(घ) उलूकम्	(*iv*) बाज़

3. समीहाया: समीपे अनेकानि क्रीडनकानि सन्ति। समीहाया: अनुज: चिन्मय: अस्ति। तस्य अपि समीपे क्रीडनकानि सन्ति। चिन्मय: कन्दुकेन खेलति। समीहा ऋचा च तत्रैव कक्षे क्रीडत:। ते प्रसन्ने स्त:। चिन्मय: अपि हसति। समीहा चिन्मयम् पश्यति। जैसिया दीपिका अपि तत्र आगच्छत:। सर्वे क्रीडन्ति।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) समीहाया: अनुज: क:? .....

(ख) समीहा ऋचा च कुत्र क्रीडत:? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) चिन्मय: किम् करोति?

.....

(ख) का आगच्छति?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

(क) 'समीहाया: कन्दुकेन' इति पदयो: किम् वचनम् अस्ति?

(*i*) एकवचनम् (*ii*) द्विवचनम् (*iii*) बहुवचनम्

.....

(ख) अनुच्छेदात् अव्ययपदे लिखत।

(*i*) ..... (*ii*) .....

4. जनकस्य जनक: पितामह: भवति। अम्बाया: जनक: मातामह: भवति। जनकस्य माता पितामही भवति। अम्बाया: माता मातामही भवति। जनकस्य अनुज: पितृव्य: भवति। पितृव्यस्य भार्या पितृव्या भवति। अम्बाया: भ्राता मातुल: भवति। मातुलस्य भार्या मातुलानी भवति। पुत्रस्य पुत्र: पौत्र: भवति। पुत्रा: पौत्रा: च प्रात: पितामहं पितामहीम् च नमन्ति। पितामह: वदति–"पुत्रेभ्य: पौत्रेभ्य: च स्वस्ति।" भीष्म: अपि पाण्डवानाम् कौरवाणाम् च पितामह: आसीत्।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) जनकस्य अनुज: क: भवति? .....

(ख) पितृव्यस्य भार्या का भवति? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) प्रात: पुत्रा: पौत्रा: च किम् कुर्वन्ति?

.....

(ख) पितामह: किम् वदति?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

(क) 'भवति' इति पदे क: धातु: अस्ति?

(*i*) भू (*ii*) भव् (*iii*) भ

.....

(ख) अनुच्छेदे 'अम्बाया:' इति पदे का विभक्ति प्रयुक्ता?

(*i*) चतुर्थी (*ii*) पंचमी (*iii*) षष्ठी

.....

5. सुप्रिया प्रात: पाठशालायां गच्छति। पाठशालायां सा अध्यापिकां नमति पठति च। अध्यापिका सुप्रियायै एकं पुस्तकं यच्छति। सुप्रिया पुस्तकं पठति। सा गृहे पठितान् पाठान् ध्यानेन लिखति स्मरति च। सा एका योग्या बाला अस्ति। सा क्रीडने अपि प्रवीणा अस्ति। सा पादकन्दुकेन अपि क्रीडति। यदा सुप्रिया संस्कृतम् पठति तदा सा वदति–"संस्कृतं सरला मधुरा च भाषा अस्ति।"

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) सुप्रिया प्रात: कुत्र गच्छति? .....

(ख) अध्यापिका सुप्रियायै किं यच्छति? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) सा पाठशालायां किम् करोति?

.....

(ख) सुप्रिया किं वदति?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

(क) अनुच्छेदे 'क्रीडने' इति पदे का विभक्ति: प्रयुक्ता?

(*i*) पंचमी (*ii*) षष्ठी (*iii*) सप्तमी .....

(ख) 'स्मरति' इति पदे क: पुरुष: अस्ति?

(*i*) प्रथम: (*ii*) मध्यम: (*iii*) उत्तम: .....

6. एक: काक: अस्ति। स: पिपासित: अस्ति। स: इतस्तत: भ्रमति परन्तु कुत्रापि जलं न पश्यति। अन्ते स: उद्याने घटं पश्यति। घटे स्वल्पं जलम् अस्ति। स: प्रयत्नं करोति। स: जलस्य पाने सफल: न भवति। तत: स: पाषाणस्य खण्डानि घटे क्षिपति। जलं च एवम् घटस्य कण्ठे आगच्छति। स: पर्याप्तं जलं पिबति।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) पिपासित: क: भवति? .....

(ख) स: पाषाणस्य खण्डानि कुत्र क्षिपति? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) काकः घटं कुत्र पश्यति?

.....

(ख) कः पर्याप्तं जलं पिबति?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

(क) 'पश्यति' इति पदे मूल धातुः कः?

(*i*) दृश् (*ii*) पश्य (*iii*) पश्य् .....

(ख) 'पाषाणस्य' इति पदस्य शुद्धम् अर्थं चिनुत।

(*i*) पत्थर का (*ii*) टुकड़े का (*iii*) पानी का .....

7. उद्याने बालाः क्रीडन्ति। तत्र एकः कृष्णः सर्पः आगच्छति। सर्पः तस्मात् स्थानात् दूरं गच्छति। सः प्रसन्नः भवति यदा सः बालकान् पश्यति। सः तान् किमपि न कथयति। एकः बालः सर्पं पश्यति। परं यदा सः तस्य उपरि पाषाणखण्डं क्षिपति तदा सर्पः बालस्य उपरि क्रुद्धः भवति।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) उद्याने बालाः किं कुर्वन्ति? .....

(ख) प्रसन्नः कः भवति? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) एक बालः कं पश्यति?

.....

(ख) सर्पः कदा क्रुद्धः भवति?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

(क) 'पश्यति' इति पदे मूल धातुः कः? .....

(*i*) दृश् (*ii*) पश्य (*iii*) पश्

(ख) 'विषधरः' इति पदाय अनुच्छेदे किं पदं प्रयुक्तम्? .....

8. यदा मेघाः आकाशे गर्जन्ति तदा मयूराः प्रसन्नाः भवन्ति नृत्यन्ति च। वर्षायां मण्डूकाः अपि प्रसन्नाः भवन्ति। यदा वर्षायाः आगमनम् भवति तदा तु सर्वे जनाः एव प्रसन्नाः भवन्ति। सर्वत्र वर्षाजलं दृष्टिगोचरं भवति। तत्र खगाः अपि उच्चैः कूजन्ति।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) मयूराः वर्षाकाले किम् कुर्वन्ति? .....

(ख) के कूजन्ति? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) सर्वत्र किं दृष्टिगोचरं भवति?

.....

(ख) वर्षाकाले के के प्रसन्नाः भवन्ति?

.....

III. कर्तारम् क्रियया सह योजयत।

(कर्ता को क्रिया के साथ जोड़िए।)

कर्ता	**क्रिया**
(क) मयूराः	(*i*) गर्जन्ति
(ख) खगाः	(*ii*) प्रसन्नाः भवन्ति
(ग) मण्डूकाः	(*iii*) नृत्यन्ति
(घ) मेघाः	(*iv*) कूजन्ति

9. रामपुरः एकः ग्रामः अस्ति। ग्रामे अनेके जनाः निवसन्ति। ग्रामे कृषकाः, चिकित्सकाः, तक्षकाः कुम्भकाराः च वसन्ति। अत्र एकः विद्यालयः अस्ति। विद्यालये छात्राः पठन्ति। अत्र एका वाटिका अपि अस्ति। वाटिकायां वानराः भ्रमन्ति खगाः च कूजन्ति।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) वानराः कुत्र भ्रमन्ति? .....

(ख) छात्राः कुत्र पठन्ति? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) ग्रामे के के वसन्ति?

.....

(ख) खगाः किं कुर्वन्ति?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

(क) धातुम् लिखत– (*i*) भ्रमन्ति .....

(*ii*) कूजन्ति। .....

(ख) विभक्तिम् लिखत– (*i*) तक्षकाः .....

(*ii*) वाटिकायाम् .....

70-80 पदपरिमिताः

1. वसन्तः ऋतुराजः भवति। चैत्रे वैशाखे च मासे वसन्तः भवति। वसन्ते द्वौ प्रमुखौ उत्सवौ भवतः। प्रथमः उत्सवः वसन्तोत्सवः अस्ति। द्वितीयः उत्सवः होलिकोत्सवः भवति। वसन्तस्य उत्सवे तु सर्वत्र प्रमोदः, हासः-परिहासः च भवति। नराः बालाः महिलाः कन्याः च गायन्ति इतः-ततः नृत्यन्ति। होलिकायाः उत्सवः फाल्गुनमासस्य पूर्णिमायाम् भवति। नराः, महिलाः, बालाः, बालिकाः, वृद्धाः च सर्वे जनाः एव प्रसन्नाः भवन्ति। जनाः परस्परं रक्तचूर्णम्, पीतचूर्णम्, पाटलचूर्णम् हरितचूर्णम् च क्षिपन्ति। सर्वे परस्परं मिलन्ति मिष्टान्नानि च खादन्ति।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) कः ऋतुराजः भवति? .....

(ख) प्रथमः उत्सवः कः भवति? .....

(ग) द्वितीयः उत्सवः कः भवति? .....

(घ) होलिकोत्सवे जनाः किम् खादन्ति? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) वसन्तस्य उत्सवे जनाः किं किं कुर्वन्ति?

.....

(ख) होलिकोत्सवे जनाः परस्परं किं क्षिपन्ति?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

(क) अनुच्छेदे 'क्षिपन्ति' इति क्रियापदस्य कर्तृपदम् किम्? .....

(*i*) परस्परम् (*ii*) चूर्णम्

(*iii*) रक्त चूर्णम् (*iv*) जनाः

(ख) शब्दार्थयोः समुचितमेलनं कुरुत।

पाटलचूर्णम्	मिठाई
मिष्टान्नम्	गुलाबी पाउडर

IV. गद्यांशस्य उचितमेकम् शीर्षकम् लिखत।

(गद्यांश का एक उचित शीर्षक लिखिए।)

.....

2. बाल्यकाले विशेषतः बालकस्य उपरि संसर्गस्य प्रभावः भवति। बालः यादृशैः बालकैः सह तिष्ठति तादृशः एव भविष्यति यदि बालकः श्रेष्ठैः बालकैः सह संसर्गः करोति सः अपि श्रेष्ठः उत्तमः च भवति। यदि बालकः दुर्जनैः बालैः सह तिष्ठति क्रीडति च, तदा सः दुष्टः एव भवति। यदि बालस्य मित्रम् असत्यम् वदति सः अपि असत्यम् वदति। यदि तस्य मित्रम् सत्यम् वदति सः अपि सत्यम् वदति। सत्यप्रियस्य बालकस्य सर्वत्र एव आदरः भवति। तस्य यशः अपि सर्वत्र प्रसरति। सः तु सर्वेषाम् प्रियः भवति। सः अध्यापकानाम् अपि प्रियः भवति मित्राणाम् अपि प्रियः भवति।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) बालकस्य उपरि संसर्गस्य प्रभावः कदा भवति? .....

(ख) कस्य बालकस्य सर्वत्र आदरः भवति? .....

(ग) सर्वेषाम् प्रियः कः भवति? .....

(घ) बालकस्य उपरि कस्य प्रभावः भवति? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) श्रेष्ठैः बालैः सह बालकः कीदृशः भवति?

.....

(ख) बालकः कदा असत्यम् वदति?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

(क) समुचितार्थम् चित्वा लिखत–

1. संसर्गः (*i*) असत्य (*ii*) विसर्ग (*iii*) संगति .....

2. यादृशः (*i*) वैसा (*ii*) जैसा (*iii*) ऐसा .....

(ख) "श्रेष्ठैः बालकैः सह संसर्गः" इत्यस्मिन् वाक्ये विशेषणम् किम्?

(*i*) श्रेष्ठैः (*ii*) बालकः

(*iii*) सह (*iv*) संसर्गः

IV. गद्यांशस्य उचितमेकं शीर्षकं लिखत।

(गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)

.....

3. रामः एकः भद्रः बालः अस्ति। सः प्रातः पञ्चवादने उत्तिष्ठति। प्रातःकाले सः पितरौ नमति। सः तदा व्यायामं भ्रमणं च करोति। तत्पश्चात् सः स्नानं करोति। सप्तवादने सः दुग्धं पिबति फलं च खादति। तदनु सः विद्यालयं गच्छति। तत्र सः शिक्षकान् नमति। सः विद्यालये ध्यानेन पठति। सः तत्र संस्कृतम् अपि पठति। सः अशनान्तरे (लंच ब्रेक में) स्वमित्रैः सह भोजनं करोति। यदा सः विद्यालयात् गृहम् आगच्छति तस्य माता तस्मै मिष्टान्नम् यच्छति। सः विश्रामं करोति। ततः क्रीडाक्षेत्रे पादकन्दुकेन क्रीडति। गृहे सः गृहकार्यं करोति। तदनु सः भोजनं करोति। निशायां च पुनः पठति। तदा तस्य जनकः अपि प्रसन्नः भवति। रात्रौ दशवादने सः शयनं करोति।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) रामः प्रातः कदा उत्तिष्ठति? .....

(ख) सः प्रातः कौ नमति? .....

(ग) माता तस्मै किं यच्छति? .....

(घ) सः दशवादने किं करोति? .....

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(पूर्ण वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) तस्य जनकः कदा प्रसन्नः भवति?

.....

(ख) सः क्रीडाक्षेत्रे किं करोति?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

(क) 'वादने' इत्यस्मिन् पदे का विभक्तिः?

(*i*) चतुर्थी (*ii*) पंचमी (*iii*) षष्ठी (*iv*) सप्तमी

(ख) 'अशनम्' पदस्य अर्थः 'भोजनम्' इति भवति तदा 'अशनान्तरे' पदस्य उचितमर्थम् चिनुत।

(*i*) पठनस्य समये (*ii*) भोजनस्य समये

(*iii*) क्रीडनस्य समये (*iv*) लेखनसमये

(ग) वचनम् लिखत–'ध्यानेन'।

(*i*) एकवचनम् (*ii*) द्विवचनम् (*iii*) बहुवचनम्

(घ) 'खिन्नः' इति पदस्य विपर्ययम् अनुच्छेदात् एव चित्वा लिखत।

(*i*) हर्षितः (*ii*) प्रसन्नः (*iii*) मुदितः (*iv*) अखिन्नः

IV. गद्यांशस्य उचितमेकम् शीर्षकम् लिखत।

(गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)

.....

4. वने एकः भिक्षुकः वसति। सः प्रतिदिनं भिक्षायै नगरं गच्छति। एकदा एका महिला तस्मै विषाक्तां रोटिकां यच्छति। सः तां रोटिकां कुटीरं नयति। मध्याह्ने एकः बालः वने सूर्यस्य तापेन मूर्च्छितः भवति। सः भिक्षुकः चिन्तयति–यत् सः क्षुधापीडितः अस्ति सः तां रोटिकां तस्मै यच्छति। सः तस्मै जलम् अपि यच्छति। सः बालः जलम् पिबति रोटिकां च खादति। यदा सः रोटिकां खादति तदा एव सः स्वप्राणान् त्यजति। तदा तस्य अम्बा आगच्छति। तस्य अम्बा तु सा एव महिला भवति या तस्मै भिक्षुकाय रोटिकाम् अयच्छत। जनाः तु सत्यं कथयन्ति–"यथा कर्म तथा फलम्"।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) वने कः वसति? .....

(ख) महिला विषाक्तां रोटिकां कस्मै अयच्छत्? .....

(ग) तां रोटिकां कः खादति? .....

(घ) प्राणान् कः त्यजति? .....

II. एकवाक्येन लिखत।

(एक वाक्य में उत्तर लिखिए।)

(क) भिक्षुकः किं चिन्तयति? .....

(ख) बालः प्राणान् कदा त्यजति? .....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

(क) भिक्षुकः कुत्र वसति?

(*i*) वने (*ii*) नगरे (*iii*) ग्रामे

(ख) अर्थम् चिनुत–'रोटिकाम्'।

(*i*) रोटी (*ii*) दाल (*iii*) दाल को (*iv*) रोटी को

(ग) 'यथा कर्म तथा फलम्' अस्मिन् वाक्ये कति अव्ययाः सन्ति?

(*i*) एकः (*ii*) द्वौ (*iii*) त्रयः (*iv*) चत्वारः

(घ) 'सः प्रतिदिनम् भिक्षायै नगरं गच्छति।' अस्मिन् वाक्ये चतुर्थी विभक्तेः प्रयोगः कस्मिन् पदे अस्ति?

(*i*) सः (*ii*) प्रतिदिनम् (*iii*) भिक्षायै (*iv*) नगरम्

IV. गद्यांशस्य उचितमेकं शीर्षकं लिखत।

(गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।) .....

5. श्रेयः निशायां एकम् स्वप्नम् पश्यति यत् सः एकस्मिन् सुन्दरे उद्याने भ्रमति। उद्याने सुन्दराणि पुष्पाणि, मधुराणि फलानि च पश्यति। उद्यानस्य मध्ये एकं तडागं पश्यति। तडागे विकसितानि कमलानि पश्यति। तडागस्य तटे एकः कच्छपः तिष्ठति। एकः मयूरः च नृत्यति। उद्याने एका बालिका अपि भ्रमति। सा बालिका श्रेयं पृच्छति–"किम् एतत् तव उद्यानम् अस्ति?" तदैव चिनॉयः तत्र आगच्छति। चिनॉयः तां बालिकां कथयति यत् एतत् उद्यानं तु चिन्मयस्य अस्ति। तौ वदतः– "आवाम् चिन्मयस्य उद्याने भ्रमावः।" सा बाला गच्छति। श्रेयस्य स्वप्नं भग्नं भवति। सः स्वगृहस्य समीपे अपि एकं सुन्दरम् उद्यानम् रचयति। चिनॉयः अपि स्वगृहस्य समीपे एकम् फलोद्यानम् रचयति।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) श्रेयः कदा स्वप्नं पश्यति? .....

(ख) सः स्वप्ने किं पश्यति? .....

(ग) तडागस्य तटे कः नृत्यति? .....

(घ) उद्यानं कस्य अस्ति? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) श्रेयः तडागे किं पश्यति?

.....

(ख) चिनॉयः किं कथयति?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

(क) अनुच्छेदे 'वदतः' इति पदे कः धातुः अस्ति?

(*i*) वद् (*ii*) वच् (*iii*) दा (*iv*) अत्

(ख) अनुच्छेदे 'कच्छपः' इति पदस्य क्रियापदं किम्?

(*i*) तडागस्य (*ii*) तटे (*iii*) पश्यति (*iv*) तिष्ठति

(ग) 'सरोवरस्य' इति अर्थे अनुच्छेदे किं पदं प्रयुक्तम्?

(*i*) सरस्य (*ii*) सरोवरस्य (*iii*) उद्यानस्य (*iv*) तडागस्य

(घ) 'निशायाम्' इति पदे मूलशब्दः कः अस्ति?

(*i*) निश् (*ii*) निशा (*iii*) नीशा (*iv*) निश

IV. गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकमेकं लिखत।

(गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।) .....

6. भारतवर्षे समये-समये उत्सवाः भवन्ति। दीपावली भारतीयानाम् एकं प्रसिद्धं पर्व अस्ति। अस्य उत्सवस्य सम्बन्धः महाराज्ञः दशरथस्य पुत्रेण रामेण सह अस्ति। स्वजनकस्य दशरथस्य आज्ञया श्रीरामः सीता लक्ष्मणेन सह वनं गच्छति। तत्र सः वनवासकाले दुष्टं रावणं मारयति। यदा वनवासस्य समयः पूर्णः भवति तदा सः स्वराज्ये पुनः आगच्छति। तेन सह तस्य अनुजः लक्ष्मणः तस्य च भार्या सीता अपि स्तः। यदा ते अयोध्यायां पुनः आगच्छन्ति तदा अयोध्यायाः जनाः प्रसन्नाः भवन्ति। ते तेषां स्वागताय घृतदीपान् प्रज्वालयन्ति। दीपावली इति उत्सवे जनाः लक्ष्मीपूजाम् अपि कुर्वन्ति। गृहाणां शोभा तु विचित्रा भवति।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) दीपावली केषां पर्वम् अस्ति? .....

(ख) रामस्य भार्या का आसीत्? .....

(ग) अयोध्याया: नृप: क: आसीत्? .....

(घ) लक्ष्मण: कस्य अनुज:? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) दशरथस्य आज्ञया वने के-के गच्छन्ति?

.....

(ख) जना: दीपावली उत्सवे किं कुर्वन्ति?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

(क) अनुच्छेदे 'भारतीयानाम्' इति पदे का विभक्ति: अस्ति?

(*i*) तृतीया (*ii*) पंचमी (*iii*) षष्ठी (*iv*) सप्तमी

(ख) अनुच्छेदस्य प्रथमे वाक्ये 'भवन्ति' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

(*i*) भारत (*ii*) भारतवर्षे (*iii*) समये (*iv*) उत्सवा:

(ग) अनुच्छेदे 'आज्ञया' इति पदे का विभक्ति:?

(*i*) षष्ठी (*ii*) प्रथमा (*iii*) चतुर्थी (*iv*) तृतीया

(घ) 'सह' इति पदेन सह का विभक्ति: अनुच्छेदे प्रयुक्ता अस्ति?

(*i*) षष्ठी (*ii*) तृतीया (*iii*) द्वितीया (*iv*) चतुर्थी

IV. गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकमेकं लिखत।

(गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)

.....

7. संस्कृतभाषा देवानां भाषा अस्ति। एषा भाषा प्रायः सर्वासाम् भारतीयभाषाणाम् जननी अस्ति। संस्कृतभाषायाम् एव चत्वारः वेदाः लिखिताः सन्ति। अस्यां भाषायाम् एव अस्माकं इतिहासः अस्माकं भूतं, भविष्यं च सर्वम् सन्निहितम् अस्ति। संस्कृतभाषा सरला सुबोधा च अस्ति। कालिदासः, बाणः, दण्डी, माघः इत्यादि कवयः तु प्रसिद्धाः सन्ति। आदिग्रन्थः रामायणम् संस्कृतभाषायाम् एव लिखितम् अस्ति। महाभारतम् अपि अस्याम् एव भाषायाम् अस्ति। संस्कृतभाषायाम् एव अस्माकं संस्कृतिः अस्माकं भविष्यं च अस्ति।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) देवानां भाषा का अस्ति? .....

(ख) आदिग्रन्थः कः अस्ति? .....

(ग) कस्यां भाषायाम् अस्माकम् इतिहासः? .....

(घ) 'महाभारतम्' कस्यां भाषायां लिखितम्? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) संस्कृतभाषायां किं किं सन्निहितम् अस्ति?

.....

(ख) संस्कृतस्य प्रसिद्धाः कवयः के सन्ति?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

(क) 'अस्माकम्' इति पदे का विभक्तिः अस्ति?

(*i*) प्रथमा (*ii*) द्वितीया (*iii*) षष्ठी (*iv*) सप्तमी

(ख) 'भाषायाम्' इति पदस्य वचनं किम् अस्ति?

(*i*) एकवचनम् (*ii*) द्विवचनम् (*iii*) बहुवचनम्

(ग) 'संस्कृतभाषा' इति पदे कति व्यञ्जनानि सन्ति?

(*i*) अष्ट (*ii*) नव (*iii*) षड् (*iv*) सप्त

(घ) गद्यांशात् अव्ययद्वयम् चित्वा लिखत।

.....

IV. गद्यांशस्य उचितं शीर्षकमेकं लिखत।

(गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)

.....

8. हिमालयः भारतस्य उत्तरदिशायां स्थितः अस्ति। अस्य शिखराणि सर्ववर्षम् हिमेन आच्छादितानि सन्ति अतएव तु अयम् हिमस्य आलयः इति हिमालयः भवति। ग्रीष्मस्य तापेन तप्ताः जनाः प्रतिवर्षं ग्रीष्मे तत्र गच्छन्ति। अनेके रुग्णाः जनाः अपि तस्य पवित्रे वातावरणे स्वस्थाः भवन्ति। अत्र अनेकानि दर्शनीयानि स्थानानि अपि सन्ति। प्रतिवर्षम् भक्ताः अत्र आगच्छन्ति। बद्रीनाथे केदारनाथे च मन्दिरेषु ईश्वरस्य दर्शनं कुर्वन्ति। हिमालयात् एव गंगा, शतद्रुः चन्द्रभागा इत्यादयः नद्यः प्रवहन्ति। हिमालयः प्रहरी इव भारतं रक्षति। अस्य रक्षणे एव भारतस्य रक्षणम्।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) भारतस्य उत्तरदिशायां कः अस्ति? .....

(ख) तापेन तप्ताः जनाः कुत्र गच्छन्ति? .....

(ग) हिमालये कानि स्थानानि सन्ति? .....

(घ) अस्य रक्षणे कस्य रक्षणम्? .....

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(पूर्णवाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) हिमालयः कुत्र स्थितः अस्ति?

.....

(ख) भक्ताः मन्दिरेषु कस्य दर्शनं कुर्वन्ति?

.....

III. उचितं मेलनम् कुरुत।

(उचित मिलान कीजिए।)

(क) शतद्रुः	(*i*) धूप से
(ख) रुग्णाः	(*ii*) ढकी हुई
(ग) तापेन	(*iii*) बीमार
(घ) आच्छादितानि	(*iv*) सतलुज

IV. गद्यांशस्य उचितमेकं शीर्षकं लिखत।

(गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)

.....

9. यदा रात्रिः गच्छति तदा सूर्यः आगच्छति। अन्धकारः प्रणश्यति प्रातः कालः च भवति। इयं मधुरा वेला भवति। चन्द्रः अस्ताचलं गच्छति। तारकाः च निस्तेजाः भवन्ति। प्रातःकाले जनाः सूर्यम् नमन्ति ईशम् च भजन्ति। प्रातःकाले खगाः कूजन्ति; जनाः स्वकार्याणि कुर्वन्ति। छात्राः स्वपाठान् कण्ठस्थी कुर्वन्ति। कृषकाः क्षेत्रेषु कृषिकार्यं कुर्वन्ति। छात्राः अध्यापकाः तु विद्यालयं प्रति गच्छन्ति। केचन् जनाः भ्रमणाय उद्यानं प्रति गच्छन्ति। तत्र जनाः भ्रमन्ति व्यायामं च कुर्वन्ति। प्रसन्नाः बालाः अपि इतः-ततः गच्छन्ति। वानराः वृक्षेषु कूर्दन्ति। सर्वत्र कोलाहलः भवति परन्तु ये अलसाः सन्ति ते गृहे एव सुप्ताः भवन्ति।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) यदा रात्रिः गच्छति तदा कः आगच्छति? .....

(ख) चन्द्रः कुत्र गच्छति? .....

(ग) प्रातःकाले के कूजन्ति? .....

(घ) जनाः कुत्र भ्रमन्ति? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) उद्याने जनाः किं-किं कुर्वन्ति?

.....

(ख) प्रातःकाले छात्राः किं कुर्वन्ति?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

(क) 'कूर्दन्ति' इति पदे कः धातुः अस्ति?

(*i*) कृ (*ii*) कूर् (*iii*) कूर्द (*iv*) कूर्द्

(ख) 'उद्याने' इति पदे का विभक्तिः अस्ति?

(*i*) पंचमी (*ii*) षष्ठी (*iii*) सप्तमी (*iv*) द्वितीया

(ग) 'कपिः' इति पदस्य कः पर्यायः गद्यांशे लिखितः अस्ति?

(*i*) वानरः (*ii*) प्लवङ्ग (*iii*) हरिः (*iv*) न कः अपि

(घ) 'भवन्ति' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम् अस्ति?

(*i*) गृहे (*ii*) कोलाहलः (*iii*) सर्वत्र (*iv*) अलसाः

IV. गद्यांशस्य शीर्षकमेकं लिखत।

(गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)

.....

अभ्यास-प्रश्नपत्रम्

अवधिः – होराद्वयम् (2 घंटे) पूर्णाङ्काः – 55

1. यथानिर्देशम् उत्तरत। $1 \times 5 = 5$

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

निम्नलिखितेषु वर्णेषु ह्रस्वस्वरान् चित्वा पुनः लिखत–

(क) ऋ, क्, च्, आ, प्, न्, इ, लृ, ए, उ, द्, अ।

.....

(ख) टवर्गस्य वर्णान् लिखत .....

(ग) संयोजनम् कृत्वा लिखत

(*i*) द् + व = ... (*ii*) त् + र = ...

(*iii*) क् + श = ... (*iv*) द् + य = ...

(*v*) ह् + र = ...

(घ) वर्णविन्यासं कुरुत

ज्ञानम् .....

(ङ) वर्णानां संयोगं कुरुत

क् + ऋ + प् + अ + य् + आ – .....

2. अधोदत्तं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायाः च पदान् चित्वा संस्कृतेन नामानि लिखत। $1 \times 5 = 5$

(नीचे दिए गए चित्र को देखकर तथा मंजूषा से पदों को चुनकर संस्कृत में नाम लिखिए।)

(क) .....

(ख) .....

(ग) .....

(घ) .....

(ङ) .....

रजकः, अश्वः, हस्तः, वृक्षः, मृगः

3. अधोदत्तेषु रूपेषु रिक्तस्थानपूर्तिम् उचितपदेन कुरुत। $1 \times 5 = 5$

(नीचे दिए गए रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित रूप भरकर कीजिए।)

(क)	मण्डूकस्य	.....	मण्डूकानाम्।
(ख)	काके	काकयोः	.....
(ग)	मक्षिकया	.....	मक्षिकाभिः
(घ)	.....	नेत्रे	नेत्राणि
(ङ)	.....	कयोः	केषु

4. निम्नलिखितेषु यथानिर्देशं लकारं परिवर्तयत। $1 \times 5 = 5$

(निर्देशानुसार लकार बदलिए।)

(क)	लिखति	(लृट् लकारे)	.....
(ख)	नंस्यामि	(लट् लकारे)	.....
(ग)	पतिष्यसि	(लट् लकारे)	.....
(घ)	द्रक्ष्यति	(लट् लकारे)	.....
(ङ)	वदन्ति	(लृट् लकारे)	.....

5. कोष्ठकप्रदत्तेषु पदेषु उचितं विकल्पं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत। $1 \times 5 = 5$

(कोष्ठक में दिए गए शब्दों से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

(क)	अलम् ..... ।	(वार्त्तालापम्/वार्तालापेन)
(ख)	..... नमः।	(कृष्णाय/कृष्णम्)
(ग)	पुत्रः ..... सह क्रीडति।	(जनकेन/जनकस्य)
(घ)	..... विना सा न गच्छति।	(अम्बया/अम्बायाः)
(ङ)	कक्षायाम् ..... अलम्।	(वार्तालापेन/वार्तालापस्य)

6. मञ्जूषागतैः अव्ययैः रिक्तस्थानानि पूरयत। $1 \times 5 = 5$

(मंजूषा में दिए गए अव्ययों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

अपि, च, न, अधुना, कदा

(क) अद्य अहम् विद्यालयम् ..... गमिष्यामि।

(ख) त्वम् क्रीडणाय ..... आगमिष्यसि?

(ग) ..... स्व गृहकार्यम् पूर्णं कुरु।

(घ) रामः सीता ..... आगच्छतः।

(ङ) अहम् ..... गच्छामि।

7. अधोलिखितानि वाक्यानि शुद्धं कुरुत। $1 \times 5 = 5$

(निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए।)

(क) सा **गच्छसि**। .....

(ख) अहम् **खादामः**। .....

(ग) वयम् **गच्छथः**। .....

(घ) युवाम् **नमावः**। .....

(ङ) भवन्तः **चलथ**। .....

8. अधोदत्तं चित्रम् गणयित्वा संस्कृतसंख्यापदेन लिखत। $1 \times 5 = 5$

(नीचे दिए गए चित्र को गिनकर संस्कृत में संख्यावाची शब्द लिखिए।)

(क) कन्दुकानि .....

(ख) छत्राणि .....

(ग) चटकाः .....

(घ) पत्राणि .....

(ङ) वृक्षौ 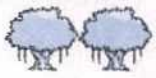 .....

9. मञ्जूषाप्रदत्तपदैः निम्नलिखितसंवादे रिक्तस्थानानि पूरयत। $1 \times 5 = 5$

(मंजूषा में दिए गए पदों की सहायता से निम्नलिखित संवाद में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।)

ध्रुवः – हे इशिके! त्वम् (*i*) ..... गच्छसि?

इशिका – अहम् (*ii*) ..... द्रष्टुम् गच्छामि।

ध्रुवः – कस्मिन् चित्रागारे चलचित्रम् द्रष्टुम् (*iii*) ..... ?